ओ३म्

सत्यार्थ-सौरभ

अगस्त-२०१२

अगस्त-2012 ◆ वर्ष 1 ◆ अंक 3 ◆ उदयपुर

सौरभ बिखरा
दिग्दिगन्त में
नील गगन घन में

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ८

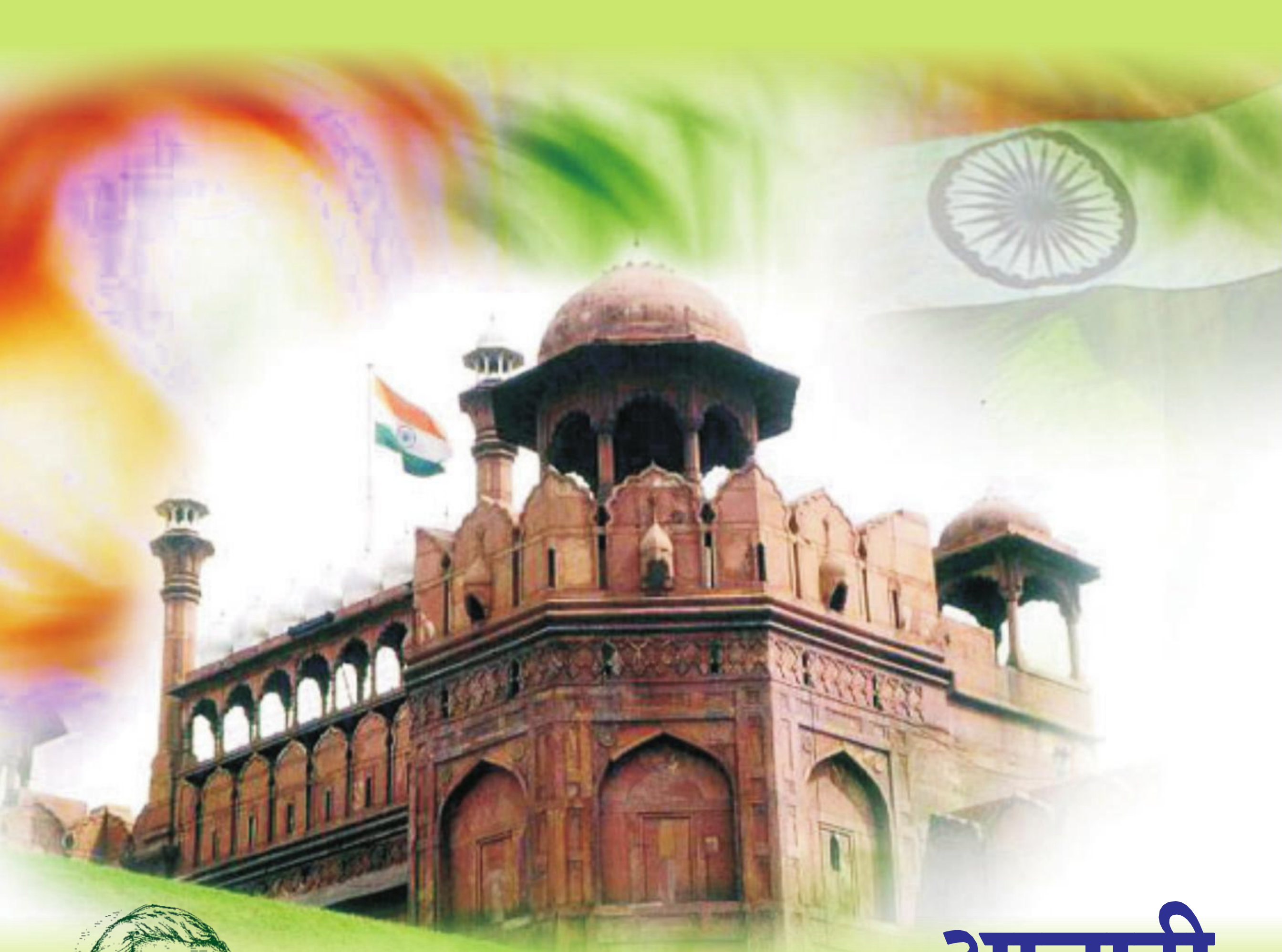

आजादी

पन्द्रह अगस्त का दिन कहता – आजादी अभी अधूरी है ।
सपने सच होने बाकी हैं, रावी की शपथ न पूरी है ।।
जिनकी लाशों पर पग धर कर आजादी भारत में आई ।
वे अब तक हैं खानाबदोश गम की काली बदली छाई ।।
कलकत्ते के फुटपाथों पर जो आंधी–पानी सहते हैं ।
उनसे पूछो, पन्द्रह अगस्त के बारे में क्या कहते हैं ।।
हिन्दू के नाते उनका दुख सुनते यदि तुम्हें लाज आती ।
तो सीमा के उस पार चलो सभ्यता जहाँ कुचली जाती ।।
इंसान जहाँ बेचा जाता, ईमान खरीदा जाता है । इस्लाम सिसकियाँ भरता है, डालर मन में मुस्काता है ।।
भूखों को गोली नंगों को हथियार पिन्हाए जाते हैं । सूखे कण्ठों से जेहादी नारे लगवाए जाते हैं ।।
लाहौर, कराची, ढाका पर मातम की है काली छाया । पख्तूनों पर, गिलगित पर है गमगीन गुलामी का साया ।।
बस इसीलिए तो कहता हूँ आजादी अभी अधूरी है । कैसे उल्लास मनाऊँ मैं ? थोड़े दिन की मजबूरी है ।।
दिन दूर नहीं खंडित भारत को पुनः अखंड बनाएँगे । गिलगित से गारो पर्वत तक आजादी पर्व मनाएँगे ।।
उस स्वर्ण दिवस के लिए आज से कमर कसें बलिदान करें । जो पाया उसमें खो न जाएँ, जो खोया उसका ध्यान करें ।।

श्रीयुत अटल बिहारी वाजपेयी

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ - सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ-सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

संपादक

अशोक आर्य

कम्प्यूटर एवं ग्राफिक्स

संदीप यादव

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११३
भाद्रपद कृष्ण पञ्चमी
विक्रम संवत्
२०६९
दयानन्दाब्द
१८८

August - 2012

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन ३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

१६ मेरे कृष्ण
कृष्ण जीवन की बाँसुरी के सात स्वर

१० वैदिक धर्म तत्त्व

१४ AJAB DESH KI GAJAB KAHANI

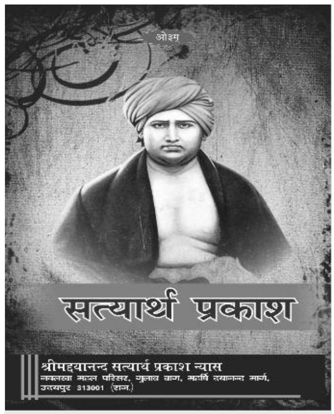

सत्यार्थ प्रकाश के अनुवाद और अनुवादक २६

समाचार २३
हलचल २४

०४ वेद सुधा
०८ नमक का कर्ज
१३ शास्त्रार्थ पंडित गणपति शर्मा
२० 'क्या मनुष्य का अगला जन्म मनुष्य का ही होगा?'
२५ बाल वाटिका
२६ तुमको न भूल पायेंगे

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १ अंक - ३

मुद्रण
द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४ , ९३१४५३५३७९, ९८२८६२६७४७

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक आर्य

।। ओ३म् ।।

वेद सुधा

राष्ट्र को दुरित, दुर्गति से बचाने का उपाय

न तमꣳहो न दुरितं देवासो अष्ट मर्त्यम्।

सजोषसो यमर्यमा मित्रो नयति वरुणो अति द्विषः।। सामवेद ५.१.४.८.

ऋषिः अंहोमुग्वामदेव्यः। देवता विश्वेदेवाः। छन्दः उपरिष्टाद् बृहती।

अन्वयः- सजोषसः देवासः यम् अर्यमा मित्रः वरुणः द्विषः अतिनयति तम्, अंहः न अष्ट, न दुरितम्।।

शब्दार्थ- (सजोषसः) प्रेम से सेवा में तत्पर (देवासः) विद्वान् (यम्) जिस प्रजा को (अर्यमा) न्यायकारी (मित्रः) सर्वहितकारी (वरुणः) श्रेष्ठ गुणोंवाला राजा (द्विषः) शत्रुओं को (अतिनयति) दमन करके शासन करता है। (तम्) उस जन को (अंहः) पाप (न अष्ट) नहीं घेरता (न दुरितम्) न पापजनित दुःख ही सताते हैं।

व्याख्या- मन्त्र में उत्तम शासन के लिए तीन बातें आवश्यक बताई गई हैं। पहली बात यह कि- 'शासन में न्याय ठीक-ठीक और समय पर हो।' दूसरी बात यह कि- 'राजा अथवा शासक-वर्ग सारी प्रजा को निज सन्तान समझकर प्रेम से व्यवहार करने वाला हो।' तीसरी बात यह कि- 'शत्रुओं से राष्ट्र की रक्षा करने वाला हो।' ये तीन बातें जिस शासन में होंगी, उसमें "अंहः दुरितम् न अष्ट" पाप, दुर्गति और अशांति कभी नहीं होगी।

भारत की स्वाधीनता से पूर्व हम अपने स्वराज्य के बड़े रंगीन सपने संजोया करते थे। सोचते थे, स्वाधीन भारत एक बार फिर सारे संसार का पथप्रदर्शक बनेगा। वह पथभ्रष्ट संसार को फिर सुख और शांति से जीने की कला सिखाएगा। भारत के ऋषियों के प्रति वह निष्ठा अब तक भी समस्त संसार के विचारकों की रही है। यूरोप के एक विश्वशान्ति-सम्मेलन के अध्यक्ष-पद से बोलते हुए मिस जटस्कू ने प्रतिनिधियों को कहा था-

"अय भूमण्डल के समस्त विद्वानो! यदि आप संसार के वायुमण्डल को क्षोभरहित और शान्त रखना चाहते हैं तो भारत के वन और गुफाओं में तप करते हुए महात्माओं की सेवा में जाओ और उनके चरणों में बैठकर उनके पवित्र ओष्ठों से जो विचार सुनो, उनका प्रचार और प्रसार योरूप और अमेरिका में करो, तब संसार में शान्ति हो सकती है, आपके विचारों से वह सम्भव नहीं।"(आर्य-भाषानुवाद)

वस्तुतः प्राचीन भारत के सुसंस्कृत आर्य लोगों ने अपने उदात्त आचार और व्यवहार से समस्त समाज का जीवन ही धर्ममय बना दिया था। उस पावन समय की झाँकी जब हम अपने अतीत के इतिहास और धार्मिक ग्रन्थों में पढ़ते हैं, तो आश्चर्य होता है।

छान्दोग्य उपनिषद् में उल्लेख है कि एक बार एक शास्त्रीय विषय की चर्चा छिड़ने पर आश्रमवासी वनस्थों को परस्पर के विचार-विनिमय से सन्तोष न हुआ। वे महात्मा उद्दालक के नेतृत्व में, उस समय के विख्यात् विचारक और विद्वान् केकय देश के अधिपति राजा अश्वपति के पास अपनी जिज्ञासा शान्त करने के लिए पहुँचे। राजा ने अतिथियों का स्वागत किया और उसके पश्चात् गोष्ठी प्रारम्भ हुई। विचार होते-होते जब भोजन का समय हो गया तो राजा ने महात्माओं से अनुरोध किया कि अब भोजन का समय हो गया है, पहले आप भोजन कर लें और शेष विषय पर उसके बाद विचार कर लेंगे।

राजा के भोजन के इस प्रस्ताव को सुनकर एक महात्मा बोले- 'राजा का अन्न तो एक साधक के लिए अग्राह्य होता है। न जाने किस-किस प्रकार से राजकोष का संग्रह होता है! इस प्रकार का अन्न मन पर दूषित प्रभाव डालेगा।' महात्मा की यह आशंका अनुचित नहीं थी। किस-किस का अन्न अग्राह्य होता है? इस पर मनु ने व्यवस्था दी है और उसका उल्लेख ऋषि दयानन्द ने भी संस्कारविधि के गृहाश्रम प्रकरण में किया है। वह श्लोक निम्न है-

दशसूनासमं चक्रं दशचक्रसमो ध्वजः। दशध्वजसमो वेशो दशवेशसमो नृपः।। (मनु. अ. ४, श्लोक ८५)

'जो चक्र के द्वारा जीविका कमाते हैं, जैसे- कुम्हार, गाड़ी और ट्रांसपोर्ट से जीविका करने वाले, अर्थात् जिनके काम में

जीवहिंसा तो बहुत होती है और प्राणियों का पालन और रक्षण नहीं होता, उनके अन्न को खानेवाले के मन पर दशहत्या करने के बराबर दूषित प्रभाव पड़ता है। जो शराब निकालकर बेचनेवाले तथा धोबी का अन्न ग्रहण करते हैं उनके मन पर चक्रवाले मन की अपेक्षा से दश गुणा और अधिक अर्थात् सौ हत्या करने के बराबर मन पर दुष्प्रभाव होता है। जो लोग बाहर के दिखावे और वेशभूषा-आडम्बर और ढोंग से जीविकोपार्जन करते हैं, उनका अन्न पहले से दस गुणा अधिक, अर्थात् एक हजार जीव-हत्या करने के तुल्य मन दूषित करता है। इसी प्रकार शासन व्यवस्था में सावधानी से मर्यादा की रक्षा न करने वाले राजा का अन्न पहले की अपेक्षा और दस गुणा अधिक, अर्थात् दस हजार हत्या करने के समान मन को सदोष करता है। अभिप्राय यह है कि मनुष्य की जीविका इसी प्रकार की हो कि जिसमें न्यून-से-न्यून प्राणियों को कष्ट पहुँचे और अधिक-से-अधिक का संरक्षण और पालन हो, वह जीविका उत्तम और उनका अन्न ही मन को शुद्ध रख सकता है, क्योंकि अन्न का सूक्ष्म भाग ही तो मन का आधार है। यों तो कृषक के काम में भी हल चलाने, सिंचाई करने, फसल की गुड़ाई, कटाई और अन्न निकालते समय भी बहुत जीव-हिंसा होती है किन्तु कृषक के अन्नादि से प्राणियों का पालन कहीं अधिक मात्रा में होता है, अतः कृषक के अन्न को पवित्र माना गया है।

तो महात्मा की इस बात को सुनकर अपनी शासन-व्यवस्था के सम्बन्ध में राजा अश्वपति ने जो बात कही, वह समस्त संसार के इतिहास में बेजोड़ है। राजा ने कहा-

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न च मद्यपः। नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः।।

'मेरे सारे राज्य में कोई चोर नहीं है, कोई कंजूस और अदानी नहीं है, कोई शराबी नहीं है, यज्ञ न करनेवाला कोई नहीं है, मूर्ख कोई नहीं है, कोई दुराचारी पुरुष नहीं है। जब पुरुष ही चरित्रहीन नहीं है तो स्त्री के तो दुराचारिणी होने का प्रश्न ही नहीं उठता।' आज के युग में बड़े माने जानेवाले देशों में अमरीका और रूस भी प्रजा की इस आचार-शुचिता का कोई दावा नहीं कर सकता। वहाँ भी सभी प्रकार के जघन्य अपराध होते हैं। इसीलिए वहाँ के देश भारत से कुछ ऊँचे आदर्श की आशा रखते थे, किन्तु स्वाधीनता के पश्चात् भारतीयों का जो चारित्रिक पतन हुआ है, वह आश्चर्यजनक है। भारत की स्वाधीनता के लिए त्याग और तप करने वाले यद्यपि बहुत बड़ी संख्या में कालकवलित हो गये, किन्तु अब भी हजारों हैं और उनकी अन्तर्वेदना कुछ बात करते ही फूट निकलती है। जालन्धर (पंजाब) से प्रकाशित होनेवाले ७ अगस्त सन् ८३ के 'पंजाब केसरी' पत्र में एक पुराने स्वतन्त्रता-सेनानी श्री बलवन्तराय उप्पल का घनश्याम पण्डित नामक पत्रकार के साथ हुए साक्षात्कार का विवरण छपा है। इसकी प्रारम्भिक पक्तियाँ इस प्रकार हैं-

''ये भी एक स्वतन्त्रता-सेनानी हैं, जिन्होंने अपने यौवन का खासा हिस्सा स्वतन्त्रता-आन्दोलन में झोंक दिया था- इस निश्चय के साथ कि जिस देश की आजादी के लिए आज लड़ रहे हैं, कल वह हमारा अपना देश होगा जिसमें सभी को समानता मिलेगी, सभी को गुल्ली, कुल्ली और जुल्ली मिलेगी। प्रशासन साफ-सुथरा होगा। सभी को न्याय मिलेगा। सभी प्रसन्न होंगे। सभी को भरपेट रोटी मिलेगी। किन्तु ३६ वर्ष बीत जाने के बाद भी देश की परिस्थितियों को देखकर निराशा होती है, क्योंकि आज देश में वे सभी वस्तुएँ अलभ्य हैं जिनकी कि स्वतन्त्र भारत में कल्पना की गई थी। आज न्याय कहीं है ही नहीं। एक सामान्य नागरिक को कोई पूछता नहीं। गरीब की कहीं सुनवाई नहीं। पहुँच और दबदबेवाले दनदना रहे हैं। कानून का डर नहीं। बहू-बेटियों का सम्मान सुरक्षित नहीं। क्या यह वही देश है जिसकी आजादी के लिए बलिदानियों ने अपने जीवन की भेंट चढ़ाई थी? आज हमें फिर उसी प्रकार के इन्किलाब को लाने की जरूरत है, जिस प्रकार का हम सन् ४७ में लाये थे।'' आज भारत का प्रबुद्ध वर्ग इसी प्रकार की कुंठा से व्यथित है-

जंगेआजादी लड़ी तब अपने सपने और थे। हाल अपना आज जो है, वो कभी सोचा न था।।

प्रश्न यह है कि हम देश की इस परिस्थिति में कैसे परिवर्तन ला सकते हैं?निराश होकर बैठने से तो हानि-ही-हानि है-

हल करने से हल होते हैं पेचीदा मसायल। वर्ना तो कोई काम भी आसाँ नही होता।।

वेद के इस मन्त्र में भारत के मानसिक नभोमण्डल में छाई इन निराशा की काली बदलियों को छाँटने के ही महत्त्वपूर्ण उपाय हैं। इनमें पहला उपाय है- देश के वायु-मण्डल को शुद्ध करने के लिए न्याय-प्रणाली पक्षपात-रहित और शीघ्र निर्णय करने वाली होनी चाहिए। आज देश में अपराधों की बाढ़-सी आ रही है। डाके, बलात्कार, हत्या और चोरी के समाचारों से

अखबार पटे पड़े रहते हैं; डाकुओं में अपठित और गरीबी से पीड़ित लोग नहीं हैं, बी.ए और एम.ए हैं। नई दिल्ली में बैंक-खजाने को लूटनेवाले सम्पन्न घरों के और उच्च शिक्षा प्राप्त युवक ही थे। उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश के बहुत बड़े डाकुओं की समस्या वहाँ की सरकारों के लिए बहुत बड़ा सिरदर्द है। इन बुराइयों के बढ़ने में कतिपय अन्य कारणों के साथ सबसे मुख्य कारण न्याय-प्रणाली की शिथिलता, न्याय की अतिव्यय-साध्यता, अपराधियों को मुक्त कराने के लिए राजनैतिक नेताओं के दबाव आदि कुछ ऐसे कारण हैं कि जिनसे अपराधियों को दण्ड का भय नहीं रहा।

हमें जो अंग्रेजों का ढाँचा उत्तराधिकार में मिला है, चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र है और चाहे न्यायालय है, हम उन्हें उसी प्रकार घसीटे ले-जा रहे हैं। इससे कितनी हानि हो रही है यह विचारने और कम करने का किसी के पास समय नहीं है। प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री जब पहली बार पद सँभालते हैं तो बड़ी-बड़ी योजनाएँ जनता के सम्मुख रखते हैं। किन्तु कुछ ही समय पश्चात् कहीं पार्टी के असन्तुष्ट तत्त्वों को अनुकूल बनाने में, कहीं विरोधी पार्टियों की योजनाएँ ध्वस्त करने में, संक्षेप से कहा जाय तो सारा समय और शक्ति अपने अधिकार की रक्षा में ही निकल जाता है। सामाजिक जीवन के परिष्कार के लिए कुछ रचनात्मक काम नहीं हो पाते।

हमारी न्याय-पद्धति ईसाइयों की भावना से प्रभावित है, जिसके चिन्तन का मुख्य केन्द्र-बिन्दु यह है कि पाप के फल, दुःख से संसार को छुड़ाने के लिए मसीह शूली पर चढ़ गए। किसी के मन को दुःख नहीं होना चाहिए। किसी उर्दू शायर के शब्दों में उनकी भावना को इस प्रकार प्रकट किया जा सकता है-

जब गुनहगारों पे देखी रहमते-परवरदिगार। बेगुनाहों ने पुकारा हम गुनहगारों में हैं।।

'जब अपराधियों पर प्रभु का विशेष कृपाभाव देखा तो शुद्ध-पवित्र व्यक्ति भी सोचने लगे कि हमसे तो ये ही अच्छे रहे, और वे निर्दोष होते हुए भी प्रभु के कृपापात्र बनने के लिए चिल्लाने लगे- हम भी पापी हैं, हमारा भी उद्धार कीजिए।'

चौथी और पाँचवी लोकसभा की सदस्यता के दस वर्षों में मेरे निर्वाचन-क्षेत्र में १५ से कुछ अधिक कत्ल के केस हुए। मैं उन केसों का सावधानी से अध्ययन करता रहा। कई-कई वर्ष तक हाईकोर्ट तक केस लड़े गये, किन्तु परिणाम यह निकला कि किसी भी केस में किसी को मृत्युदण्ड नहीं मिला। हाँ, दो अभियोगों में कुछ को आजीवन कारावास अवश्य हुआ। आजीवन कारावास शब्द सुनने में ही भयंकर लगता है; उसकी अवधि बीस वर्ष है और वे कट-छटकर १२ या १५ वर्ष ही रह जाते हैं। जहाँ केस में थोड़ी-सी भी संदिग्ध स्थिति आती है कि बस न्यायाधीश सब-छोड़कर उसे दोषमुक्त कर देते हैं।

होना यह चाहिए कि आज के कानून में कुछ अपनी दण्ड-प्रक्रिया के उपादेय अंशों का समावेश करके इसका स्वरूप तेजस्वी बनाना चाहिए, जिससे अपराधी आतंकित हों। उदाहरण के लिए मैं चाणक्य के कौटिल्य अर्थशास्त्र की एक बात का उल्लेख यहाँ करता हूँ-

चाणक्य ने लिखा है कि यदि चोरी की घटना कहीं घट जावे तो उस क्षेत्र के पुलिस-अधिकारी को आदेश होना चाहिए कि तीन मास के अन्दर चोरी का पता लगाकर गये हुए माल को उसके मालिक को दिलवाए और अपराधी को उचित दण्ड की व्यवस्था कराए। यदि पुलिस-अधिकारी नियत अवधि में चोरी का पता न लगा सके तो चोरी गए हुए माल की क्षतिपूर्ति उस अधिकारी के वेतन से करानी चाहिए। यह बात कितनी उत्तम है! इस नियम का पहला लाभ तो यह होगा कि पुलिस जनता के जानमाल की पूरी चौकसी से रक्षा करेगी और यदि कहीं दुर्घटना होगी तो पूरी सतर्कता से माल का पता लगाएगी और दोषी को दण्ड दिलवाएगी। दूसरा लाभ यह होगा कि जनता का सरकार में विश्वास बढ़ेगा और वह अपने को सुरक्षित समझकर पूरे उत्साह से उद्योग-धन्धे चलावेगी।

इस समय भारत में अन्धेर मचा हुआ है। अधिकांश अपराधी अपनी कमाई में पुलिस को भागीदार बनाकर निर्भयता से दुष्कर्म करते हैं। उन्हें पता है थाने में पहले तो रिपोर्ट ही दर्ज नहीं होगी। यदि ले-देकर रिपोर्ट लिखी भी गई तो उस पर कार्यवाही

कुछ नहीं होगी। पुलिस की इस अवस्था पर पंजाब के एक आर्य-प्रचारक बड़ी मनोरंजक कहानी सुनाया करते थे- एक मीरासी के घर में चोरी होने पर उसने थाने में रिपोर्ट कर दी और वहाँ से तफ़्तीश के लिए पुलिस आई। मीरासी हुक्का पी रहा था। पुलिस के अधिकारी ने मौक़े का मुआयना किया और मीरासी से पूछताछ करते हुए चोरी में गए सामान का ब्यौरा नोट करना आरम्भ किया। नक़दी, बर्तन-भाण्डे, कपड़े सब लिखा दिए। पुलिस आफिसर ने पूछा- 'और कोई चीज़ तो लिखनी शेष नहीं रही?' मीरासी ने कहा- 'सब लिस्ट मुझे एक बार सुना दीजिए।' पुलिसवाले ने सब चीज़ें पढ़ दीं। मीरासी ने कहा- 'इनमें एक हुक्का और नोट कर दीजिए।' पुलिस वाले ने आश्चर्य से मीरासी को देखते हुए कहा- 'हुक्का तो तुम पी रहे हो, यह कहाँ गया है?' मीरासी ने कहा- 'इसे बेचकर आपकी भेंट-पूजा करूँगा, मेरी ओर से तो गया ही!' इस बात में कोई अतिशयोक्ति नहीं है। थाने में रिपोर्ट भी तब लिखी जाती है, जब कुछ चढ़ावा चढ़ा दिया जाता है। लेन-देन और परिचय-प्रभाव का क्रम कहीं-कहीं तो हाईकोर्ट तक भी पीछा नहीं छोड़ता।

देश की आपराधिक वृत्ति में सुधार के लिए इसमें परिवर्तन करना होगा। दुःखियों को यह विश्वास होना चाहिए कि हम राजकीय व्यवस्था में सुरक्षित हैं।

तो मन्त्र में पहली बात कही गई कि न्याय शीघ्र, सुलभ और निष्पक्ष होना चाहिए।

मन्त्र की दूसरी बात है कि शासक-वर्ग प्रजा को अपनी सन्तान के समान प्रिय समझे। जैसा कि कालीदास ने रघु के राज्य का वर्णन करते हुए लिखा है, "स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः"- 'समस्त प्रजा का वास्तविक पिता रघु ही था, उनके माता-पिता तो केवल जन्म देने वाले थे।' ऐसे आत्मीयता के वातावरण में प्रजाजन राष्ट्र की रक्षा के लिए बड़े-से-बड़ा त्याग करने को उद्यत हो जाते हैं।

रामायण और महाभारत में हम पढ़ते हैं कि जब राम और पांडव वन को चले तो पीछे-पीछे प्रजा के लोग भी साथ चल दिये। यह आत्मीयता का सम्बन्ध शासकों के सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार का ही परिणाम था। तो मन्त्र में परामर्श दिया कि शासक-वर्ग परिवार के समान आत्मीयता से जनता के साथ बरतें।

मन्त्र की तीसरी बात है शासक आक्रान्ता और शत्रुओं से राष्ट्र की रक्षा करनेवाला हो। राष्ट्रीय सेना दक्ष और शक्ति-सम्पन्न हो, जो शत्रु को मुँहतोड़ उत्तर दे सके। यह शक्ति तभी आएगी जब संयमी और वीरपुरुष राष्ट्र की रक्षापंक्ति को सँभालेंगे। विलासी और अय्याश राष्ट्र की रक्षा नहीं कर सकते। मुग़ल शासन के अन्तिम दिनों में इसी तरह के दुर्गुणों से राष्ट्र दुर्बल हो गया और विदेशी आक्रान्ता यहाँ की प्रजा को अपमानित करके यहाँ की अपार सम्पत्ति, कोहेनूर और तख़्ते-ताऊस तक को यहाँ से ले गए थे। इस प्रकार के दुर्बल राष्ट्र में अन्यान्य दोष भी आ जाते हैं। यदि देश के प्रहरी संयमी, देशभक्त और वीर हों तो ऐसे राष्ट्र में पाप और अशान्ति नहीं होती।

पं. शिव कुमार शास्त्री
(स्मृति शेष)

❑❑❑

यदि हम सौंपी गयी जिम्मेवारी को ईमानदारी
से पूरा करने में जुटे रहें, तो इतना तय मान
लें कि कभी भी निराशा का सामना नहीं करना पड़ेगा

सत्यार्थ-सौरभ घर-घर पहुंचावें

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

कविता

रक्षाबंधन

कच्चे सूत से बँधी,
पक्की डोर है राखी
बहना का प्यार और,
भाई का विश्वास है राखी
यह किसी पूछ-परख का,
रिश्ता नहीं बल्कि
बहना के हक की दरकार है राखी
देहरी पर बैठी बहना को,
भाई के आगमन के हिलोरे देती
शीतल बयार है राखी
मायके का एक आसरा,
सिर पर भाई के हाथ का
सुकून और मीठा अहसास है राखी
जुदाई के गम में,
मिलन की आस और
आँसूओं से छलकता प्यार है राखी
मीठी शरारतों का,
बचपन की यादों का
चलता-फिरता चित्रहार है राखी।

- अन्तर्जाल

नमक का कर्ज ...

आत्म निवेदन

प्रायः यह कहने में आता है कि व्यक्ति को नमक का कर्ज चुकाना चाहिए। दूसरे शब्दों में कहें तो जिसका नमक खाया है उसके साथ वफादारी निभानी चाहिए। हर स्थिति में उसका साथ देना चाहिए। परन्तु विचार करें कि क्या यह स्थिति निरपेक्ष है? सत्य अथवा धर्म की प्रतिष्ठा जब इस नमक के कर्ज के आड़े आती हो तो क्या किया जाय?अन्नदाता के अपकृत्यों का समर्थन किया जाय अथवा सत्य वा धर्म का साथ दिया जावे?भारतीय परम्परा,शास्त्र तथा ऋषि व्यवस्था ऐसी स्थिति में बिल्कुल स्पष्ट है । धर्म की रक्षार्थ,सत्य के रक्षार्थ अन्नदाता तो क्या गुरुजनों का भी तिरस्कार निःसंकोच कर देना चाहिए। क्योंकि गुरुजन स्वयं ही स्पष्ट आज्ञा देते हैं- 'तू सदा सत्य बोल,धर्माचार कर...प्रमाद से सत्य को कभी मत छोड़, प्रमाद से धर्म का त्याग मत कर......, जो अनिन्दित धर्मयुक्त कर्म हैं उन सत्यभाषणादि को किया कर। उनसे भिन्न मिथ्याभाषणादि कभी मत कर। (सत्यार्थ प्रकाश पृ.५२) आगे गुरुजन यहाँ तक कह देते हैं-'जो हमारे सुचरित्र अर्थात् धर्मयुक्त कर्म हों, उनका ग्रहण कर और हमारे पापाचरण, उनको कभी मत कर' (सत्यार्थ प्रकाश पृ.५२)

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः। तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोऽवधीत्।। (मनु.८.१५){सत्यार्थ प्रकाश पृ.१७६}

मरा हुआ धर्म, मारनेवाले का नाश, और रक्षित किया हुआ धर्म, रक्षक की रक्षा करता है। इसलिये धर्म का हनन कभी न करना, इस डर से कि मारा हुआ धर्म कभी हमको न मार डाले।।

मनु महाराज का मत है कि 'अब्रुवन्विब्रुवन्वापि नरो भवति किल्विषी (मनु ८.१३) {सत्यार्थ प्रकाश पृ.१६७}। अर्थात् सत्य और उचित बात न कहने वाला अथवा गलत बात कहने वाला मनुष्य पापी होता है।'

भीष्म पितामह और श्रीकृष्ण संपूर्ण महाभारत के केन्द्र में पाये जाते हैं। परन्तु 'नमक के कर्ज' के संबंध में दोनों के विचार मेल नहीं खाते। महाभारत के प्रत्येक दुःखद प्रसंग के संदर्भ में अपनी निष्क्रियता और पक्षपात को जामा पहनाने के लिए भीष्म कहते हैं-

'अर्थस्य पुरुषो दासो दासस्त्वर्थो न कस्यचित्। इति सत्यं महाराज बद्धोऽस्म्यर्थेन कौरवैः। (महाभारत भीष्म पर्व ३६.४२)

हे राजन! (युधिष्ठिर) मनुष्य अर्थ का दास है, अर्थ किसी का दास नहीं। यही सत्य है। मैं धनोपभोग के कारण कौरवों (दुर्योधनादि) से बँधा हुआ हूँ।'

पाठकगण! जितने भी दुष्चक्र पाण्डवों के विरुद्ध दुर्योधनादि ने प्रवृत्त किए, चाहे वह भीम को विष देकर मारना हो, वारणावत के लाक्षागृह में माता कुन्ती सहित पाण्डवों को भस्म करने का षड्यंत्र हो,द्यूत का आयोजन हो,द्रौपदी का शीलभंग हो और भीष्म उसके द्रष्टा हों, पाण्डवों को १३ साल का वनवास और उन शर्तों का पूर्णतः पालन करने के पश्चात् भी दुर्योधन द्वारा पाण्डवों को सुई की नोंक के बराबर भूभाग न देने का निर्णय हो, घोरतम युद्ध की संभावना समक्ष हो, ऐसे में समर्थ होते हुए भी उपरोक्त मासूमियत से भरा स्पष्टीकरण देना- कि पुरुष अर्थ का दास है?क्या समुचित है? क्या समाज और राष्ट्र की महती हानि के लिए इतिहास भीष्म को क्षमा कर देगा?कदापि नहीं। और कुछ नहीं तो द्रौपदी के आर्तनाद को सुनकर ही भीष्म अपने रौद्र स्वरूप में आ जाते तो कौरवों की क्या बिसात थी कि वे अनर्थकारी कार्यों की शृंखला जारी रख पाते। सत्य ही है कि किसी भी परिवार/समाज का मुखिया विषम परिस्थितियों में जब पक्षपातरहित न रहकर सत्य-धर्म के प्रवर्तन के अपने कर्तव्य को त्याग देता है तब उस परिवार/समाज/राष्ट्र की हानि को कोई नहीं रोक सकता।

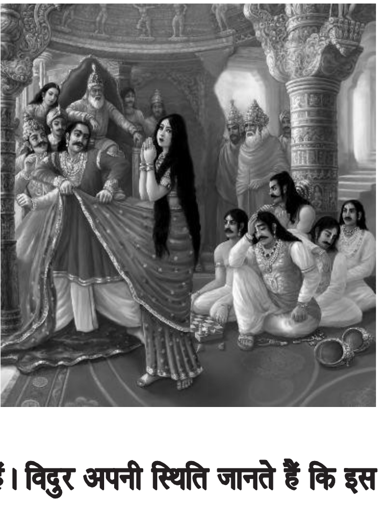

यह तो बात रही समर्थ भीष्म की पर दूसरी ओर असमर्थ विदुर खड़े दीख पड़ते हैं। विदुर अपनी स्थिति जानते हैं कि इस

नक्कारखाने में उनकी आवाज तूती के समान ही होगी, परन्तु वे सत्य-कथन अपना धर्म मानते हैं चाहे कोई माने या न माने। द्रौपदी को घसीटकर सभा में लाने के दुर्योधन के अनर्थकारी आदेश पर मात्र विदुर ही बोले-'मूर्ख! तुझे पता नहीं कि तू फाँसी पर लटक रहा है और मरने वाला है, तभी तो तेरे मुँह से ऐसी बातें निकल रही हैं..... (महाभारत सभा पर्व ६६.२-१२)

समय काल कोई भी हो हमारी स्थिति कुछ भी हो पर विदुर का मार्ग ही सदैव अनुकरणीय है।

प्रारम्भ में हमने श्रीकृष्ण जी महाराज की चर्चा की। उनका संपूर्ण जीवन सत्य और धर्म की रक्षार्थ ही बीता। अपने हों या बेगाने, जो सत्य मार्ग पर हो वही कृष्ण की कृपा का पात्र था। आज के भाई भतीजावाद के इस युग में भले ही निहित स्वार्थों के सूत्र में बँध लोग इसका महत्व न समझें, परन्तु कुरुकुल के बड़े बूढ़ों को सम्बोधित कर श्री कृष्ण स्पष्ट कहते हैं।-

'कुरुकुल के सभी बड़े बूढ़े लोगों का यह बहुत बड़ा अन्याय है कि आप लोग इस मूर्ख दुर्योधन को राजा के पद पर बिठाकर इसका बलपूर्वक नियंत्रण नहीं कर रहे हैं।'

कंस के बारे में श्रीकृष्ण कहते हैं कि ......कंस बड़ा दुराचारी एवं अजितेन्द्रिय था। ...अतः सजातीय बन्धुओं के हित की इच्छा से मैंने महान् युद्ध में उस उग्रसेन पुत्र कंस को मार डाला। (महाभारत/उद्योग पर्व/३४,३६-३७) यहाँ यह भी ध्यान देने योग्य है कि कंस कृष्ण का मामा था। परन्तु असत् के मार्ग का पथिक बन चुका था, इसलिये कृष्ण ने निःसंकोच उसका वध कर दिया।

विभीषण रावण का भाई था। पर रावण के कुकृत्यों के चलते उसने प्रथम तो भाई को समझाने का बहुत प्रयास किया। पर न मानने पर उसे त्याग दिया। अर्थात् यह समझ लेना चाहिए कि भारतीय मनीषा तथा परम्परा ने सदैव सत्य तथा न्याय का पक्ष लेने वाले को आदर दिया है। नमक का कर्ज असीमित रूप से स्वीकार्य नहीं है। अतः समाज में बड़ों को, विद्वानों को, नेताओं को, 'नमक के कर्ज' को चुकाने में नहीं वरन् 'धर्म-चक्र' के प्रवर्तन में रत रहना चाहिए। यही मार्ग श्रेयस्कर है।

- अशोक आर्य
०९३१४२३५१०१,०९००१३३९८३६

❑❑❑

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले वार्षिक महोत्सवों की शृंखला में इस वर्ष

५ से ७ अक्टूबर २०१२

में

नवलखा महल उदयपुर में

आर्य जगत् के विश्व विख्यात् विद्वानों के सान्निध्य में

आयोज्य महोत्सव में सभी आर्यजन, सत्यार्थ प्रकाशप्रेमी सादर सपरिवार इष्ट मित्रों सहित आमन्त्रित हैं।

विशेष अनुरोध- प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं के अधिकारियों से, गुरुकुलों के आचार्यों से, सभी आर्य पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों से, सभी संन्यासीवृन्द, वानप्रस्थ महानुभावों से व आर्यजगत् के विद्वानों, पुरोहितों से, सभी आर्य श्रेष्ठियों से करबद्ध प्रार्थना है कि इस अवसर पर होने वाली 'सत्यार्थप्रकाश-कार्यशाला' को अपनी गरिमामयी उपस्थिति से दिशा प्रदान करें।

कृपया उक्त तिथियाँ उदयपुर पधारने हेतु अवश्य सुरक्षित कर लें। रिजर्वेशन करा लेवें। सामान्य आवास व भोजन व्यवस्था निःशुल्क होगी। होटल आदि में विशेष सुविधा चाहने वाले पृथक् से लिखें व राशि भेजें।

आप अपना पवित्र अर्थ-सहयोग न्यास के नाम ड्राफ्ट, चैक, धनादेश द्वारा प्रेषित करने की अनुकम्पा करें। यह दान-राशि, आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत कर-मुक्त है।

- निवेदक -

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर

जितना अभीष्ट नीति तत्त्व है, जीवन के लिए आवश्यक जितनी सच्चाई है, कुटुम्ब, समाज, राष्ट्र और विश्व सन्तुलन के लिए जितना प्रेममय ऋृजु व्यवहार है, उन सबको हम धर्म कहते हैं।

जिस व्यक्ति ने धर्म को अपने जीवन में लाने का प्रयत्न किया है, ऐसे व्यक्ति को हमारे यहाँ धर्मात्मा कहा जाता है। धर्म का जो प्राञ्जल और भव्य स्वरूप है, उसका एक अंश भी जिस मानव के भीतर आ जाता है, उसकी चित्तवृत्ति विश्वास के योग्य बन जाती है। उसे स्वयं जैसे अपने भीतर निष्ठा का एक केन्द्र मिल जाता है उसे वह अपनी भावना से और अपने कर्म से बढ़ाने लगता है। इस प्रकार के व्यक्ति का मन विश्व के चैतन्य स्रोत की ओर मुड़ जाता है। उसकी जड़ता हट जाती है और बन्धन शिथिल हो जाते हैं। इस प्रकार का व्यक्ति अपने केन्द्र में ऊँचा उठ जाता है। उसमें कर्म और विचार की नई शक्ति का जन्म होता है। नीतिमत्ता ही उसकी प्रभाव शक्ति बन जाती है, जिस स्थल में, जिस कुटुम्ब या समाज के जिस क्षेत्र में ऐसा व्यक्ति होता है, वह अपने चारों ओर प्रकाश फैलाता है और आकर्षण का केन्द्र बन जाता है। ऐसे व्यक्ति की पहिचान छापा, तिलक, माला या वेश से नहीं होती, ये बाह्य चिह्न हैं, धर्म तत्त्व से इनका सम्बन्ध नहीं है। धर्मात्मा वह है जिसकी आत्मा में सूर्य के प्रकाश की तरह प्रकाशक धर्म तत्त्व प्रविष्ट हो गया हो। धर्म की सत्यात्मक ज्योति से जिसके मन का तमस् दूर हो गया हो। स्थूल जीवन से ऊपर जो एक नियामक सूक्ष्म दिव्य जीवन है, उसकी सत्ता में ऐसा व्यक्ति आस्थावान् होता है, उसे हम नीति कहें या सत्य का नाम दें या धर्म कहें। धर्म जिसके जीवन का स्पर्श करता है, ऐसे व्यक्ति को समाज से पृथक् उसके गुणों से बहिर्भूत या उसके लिए निरुपयोगी नहीं मानना चाहिए। सच्चा धार्मिक व्यक्ति नितान्त सामाजिक भी होता है। धर्म का आचरण करने का अर्थ यह होता है कि व्यक्तिगत जीवन, पारिवारिक जीवन और सामाजिक जीवन के संघर्ष से जो समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, उनसे हम भागें नहीं, उनमें व्यावहारिक कुशलता के साथ जो धर्मनीति का ही दूसरा नाम है, भाग लें और उनके समाधानों का प्रयत्न करें। इस प्रकार का व्यक्ति समाज के लिए आवश्यक है। आधुनिक भाषा में

वैदिक धर्म तत्त्व

(१)

आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय

धर्मनिष्ठ व्यक्ति के लिए हम सज्जन शब्द का प्रयोग करते हैं। वह व्यक्ति सज्जन नहीं जो सबके प्रति केवल मुख से भद्र-भद्र कहने की युक्ति अपनाता है। वास्तविक सज्जन तो सत्कर्म करने में सक्षम प्राणी होता है। वह नीति धर्म को जीवन के धरातल पर उतारने का प्रयास करता है। ऐसे ही व्यक्ति को वैदिक परम्परा में धर्मात्मा योगी भी कहा जाता है। गृहस्थ धर्म में रहता हुआ जब वह धर्मपरायण होता है तब वह सज्जन तथा जब वह अपने क्षेत्र का और अधिक विस्तार कर लेता है, तब वानप्रस्थ और संन्यास यह पारिभाषिक शब्द उसे अलंकृत करते हैं।

धर्मपरायण व्यक्ति परलोक के लिए ही नहीं, इसी लोक के लिये आवश्यक है। यद्यपि धर्म अभ्युदय और निःश्रेयस सिद्धि प्राप्त कराता है अथवा अभ्युदय और निःश्रेयस दोनों सिद्धियाँ जिससे प्राप्त हों, वह धर्म है परन्तु जो प्रत्यक्ष जीवन की उपेक्षा करके परोक्ष जीवन के पीछे भागता है,उसका परिणाम अच्छा नहीं होता। वैदिक संस्कृति प्रत्यक्ष जीवन के प्रत्येक अंग को सुसंस्कृत करने का विधान बनाती है। सौ वर्ष तक कर्म करते हुए जीवित रहने के लिए यह मानव देह मिली है। इस प्रकार जिस धर्म की सिंह गर्जना है, वह दैहिक जीवन का तिरस्कार कर ही नहीं सकता। वैदिक धर्म का जो सरल मानचित्र या नक्शा खींचा गया है, उसमें व्यक्ति के चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति और तीन ऋणों की पूर्ति आवश्यक है। वह सर्वांगपूर्ण जीवन की योजना है किसी अंग से

> सम्भवतः धर्म ही एक ऐसा तत्त्व है जिसके स्वरूप को लेकर सर्वाधिक भ्रम की स्थिति है। ९९ प्रतिशत मनुष्य 'धर्म' के नाम पर प्रचलित बाह्य आडम्बरों को ही 'धर्म' समझ लेते हैं। स्थिति यहाँ तक है कि घर-संसार सबको छोड़कर अकर्मण्यता का जीवन भी धर्म के नाम पर बिताया जा रहा है तो घोर भोगवादी परम्पराएँ भी धर्म के नाम पर ही स्थापित हुयीं। ऐसे में भ्रम की स्थिति और जटिल हो जाती है। आश्रम व्यवस्था धर्म की सम्पूर्णता को व्याख्यायित करती है। गृहस्थ जहाँ 'धर्म' की प्रशिक्षणशाला है, वहीं 'धर्म' की परीक्षा स्थली भी। आर्य जगत् के विश्वविख्यात् विद्वान् आचार्य श्रोत्रिय जी ने प्रस्तुत लेख में अपनी लालित्य से परिपूर्ण साहित्यिक शैली में धर्म-तत्त्व को उकेरा है। तत्त्व-दर्शन के साथ साहित्यिक रस-पान भी पाठक कर सकेंगे ऐसा हमें विश्वास है।
>
> – अशोक आर्य

विकल जीवन की नहीं। इस योजना को आयु के शत संवत्सर में पूरा करने का विधान वैदिक धर्म के चार आश्रम हैं। आश्रमों की कल्पना मानव जीवन को अत्यन्त सुन्दर कविता के रूप में परिणित करती है जैसे यह जीवन छन्द है और प्रत्येक आश्रम उसका एक एक चरण है। जीवन में विकास और प्रगति को भरपूर स्थान देने से ही आश्रमों की कल्पना संभाव्य है। हममें से प्रत्येक को एक छोर से आरम्भ करके दूसरे छोर तक पहुँचना है। इस यात्रा के चार ईप्सित पड़ाव ही चार आश्रम हैं। जिस प्रकार प्रकृति स्वयं हमारे शरीर, उसकी कर्मशक्ति और इच्छाओं में परिवर्तन करती है उसी की स्वीकृति और मान्यता जीवन के चार आश्रमों की युक्ति है। वसन्त, ग्रीष्म और शरद इन तीन ऋतुओं में संवत्सर अपने वैभव को उड़ेलकर हमारे सामने रखता है, ऐसे ये चार आश्रम हैं। पुरुषरूपी संवत्सर की ये ऋतुएँ हैं। वसन्त ऋतु जीवन का पहला भाग है या आश्रम है। ग्रीष्म ऋतु आयु का दूसरा भाग या गृहस्थाश्रम है। आयु का परिशिष्ट भाग शरद ऋतु के समान है। जिसमें हेमन्त का अन्तर्भाव है। वहीं आयुष्य का पर्य्यवसान है। जीवन की इस कविता में छन्दोबद्ध गति है। क्रमिक विकास से यौवन के पुष्पोद्गम एवं जरा के परिपाक या फल निष्पत्ति के जितने स्मरणीय विधान हैं, उन सबको इस आश्रम प्रणाली में गूँथ दिया गया है।

समन्वय इस आर्य वैदिक धर्म तत्त्व की विशेषता है। उस समन्वय को प्राप्त करने की महती युक्ति आश्रम प्रणाली थी और इसका आज भी उतना ही महत्व है जितना पहले कभी था। ज्ञान-मार्ग और कर्म-मार्ग, इहलोक और परलोक, स्वार्थ और परार्थ, संग्रह और त्याग इनसे उत्पन्न होने वाली समस्याएँ तो प्रत्येक व्यक्ति के लिए होती हैं। उन्हें हम इसी जीवन में ठीक समय पर कैसे सुलझा सकें और उनकी माँग को पूरा कर सकें जिस प्रणाली के द्वारा वही आश्रम प्रणाली है। हमें उचित है कि हम अपने धर्म के गौरव शिखर के रूप में इस स्वस्थ जीवन विधि की रक्षा करें। जीवन का इससे अधिक सुचिन्तित क्रम और कहीं प्राप्त नहीं हो सकता।

अर्थ, काम, धर्म और मोक्ष इन चारों को धार्मिक परिभाषा में पुरुषार्थ कहा गया है। यह भी सर्वांग जीवन का एक चित्र है। मानवीय जीवन का स्वास्तिक इन चार भुजाओं से पूरा बनता है। सच्चा दृष्टिकोण वह है जो अर्थ और काम को भी जीवन के लिए उतना ही आवश्यक समझता है जितना धर्म और मोक्ष को। आयु के पहले भाग में हम शरीर प्राण और मन से बढ़ते हैं और अपने व्यक्तित्व का सीधा मेरुदण्ड प्राप्त करते हैं। यही जीवन में अर्थ मात्रा अर्थात् भौतिक साधन सम्पत्ति की उपलब्धि है। विद्या और शिल्प के उपार्जन से मानव अपने को उस मंदिर में प्रवेश के योग्य बनाता है जिसके प्रसाद से वह फिर जन्म भर के लिए संतुलित स्थिति प्राप्त कर लेता है। गृहस्थाश्रम आयु का सबसे महत्वपूर्ण भाग है। जिसकी संभावनाएँ अनन्त हैं।

यों तो वैदिक आर्य धर्म में तीनों आश्रमों के नियम और उद्देश्यों को विस्तार से बताया गया है और उन पर पर्याप्त ध्यान भी दिया गया है, परन्तु उसका मुख्य गौरव गृहस्थ धर्म पर ही रहा है। प्राण और मन की असीम उमंग के साथ हम इस आश्रम में प्रवेश करते हैं। गृहस्थ धर्म से पहले मनुष्य अधूरा रहता है। विवाह-कर्म के द्वारा वह पूरा बनता है। गृहस्थ-धर्म का अर्थ है प्रकृति के वैज्ञानिक विधान का पालन। पुरुष और स्त्री इन दोनों के सम्मिलन से ही व्यक्ति का जीवन पूर्ण बनता है। जैसा कहा गया है

'अर्धो ह वा एष आत्मनो यज्जाया तस्माद् यावज्जाया न विन्दते नैन तावत् प्रजापते,असर्वो हि तावद्भवति। अथ यदैव जायां विन्दतेथप्रजायते वर्हिहि सर्वो भवति।'

शतपथ ब्रा. ५,२,१,१०।

अर्थात् 'अपने आपका आधा भाग स्त्री है। जब तक पुरुष पत्नी की प्राप्ति नहीं करता वह सन्तान उत्पन्न नहीं कर सकता, क्योंकि वह तब तक अधूरा रहता है। जब वह पत्नी प्राप्त कर लेता है तब सन्तति उत्पन्न करता है, क्योंकि तब वह पूरा हो जाता है।'

जिस समय आयुष्य के प्रथम भाग की पावन पद्धति पूरी करके व्यक्ति विवाह का संकल्प करता है,वह उसका महान् संकल्प होता है। महाभारत में उसे मनुष्य का दीप्त निर्णय या प्रकाश से भरा हुआ संकल्प कहा गया है। ऐसे चमकीले विचार को लेकर मानव अपने लिए गृहस्थाश्रम का विधान रचता है, उसे भगवान व्यास ने पावन धर्म कहा है।'

सर्वाश्रमदेप्यादुर्गार्हस्थ्यं दीप्तनिर्णयम्।
पावन पुरुष व्याघ्र यं धर्मं पर्युपासते।

महा.भा.शान्ति ६६,३५।

गृहस्थाश्रम मानव जीवन की अपूर्व ज्योति है। इस आलोक में

उसके लिए नए कर्म पथ खुल जाते हैं। गृहस्थ की भास्वर ज्योति किसे प्रिय न होगी? गृहस्थ के रूप में रस का नया सोता हमारे भीतर से प्रकट होता है। जो रस सृष्टि का मूल हेतु है वही गृहस्थाश्रम में मानव की बाँट में आता है। वह जीवन को सुख और शान्ति से सींच देता है। श्रद्धा, यज्ञ, ज्ञान, सत्य, तप, प्रेम आदि जितने भी जीवन के शक्तिशाली तत्व हैं, वे सब गृहस्थाश्रम के ऊपर अपना सम्मिलित प्रकाश डालते हैं और उसकी रक्षा एवं वृद्धि करते हैं। नई-नई सृष्टि विश्व का नियम है। यही उसके भीतर भरे हुए रस की चरितार्थता है। गृहस्थ आश्रम में पति पत्नी के सम्मिलन से वह नई सृष्टि अस्तित्व में आती है। माता और पिता से बालक जन्म लेते हैं। यही सृष्टि का मांगलिक विधान है। व्यवस्थित और विकासशील जीवन की संज्ञा गृहस्थ है। जीवन रूपी यज्ञ की वेदी गृहस्थ है। जीवन के अनेक रमणीय कर्मों का अधिष्ठान वही है।

गृहस्थ की महिमा का मूल नारी है। स्त्री और पुरुष दोनों परिवार के मूल हैं। नदी के तटों की भाँति दोनों के बीच में ही जीवन की धारा प्रवाहित होती है। जैसे सीपी के दो दलों के बीच में मोती का जन्म होता है, वैसे ही स्त्री और पुरुष इन दोनों के मध्य में संतति है। परमात्मा की वाणी वेद में माता-पिता की उपमा पृथिवी और द्युलोक से दी गई है। द्यावा-पृथिवी एक ही संस्थान के दो पूरक भाग हैं। स्त्री-पुरुष पति-पत्नी होते हुए भी एक हैं। दोनों के इस अभेद की स्वीकृति विवाह संस्कार है। तत्संबंधी मन्त्रों में कहा गया है-

अमोहमस्मि। सात्वम्। सात्वमसि अमोहम्।
सामाहमास्मि ऋक् त्वम्। द्यौर हं पृथिवी त्वम्।

अथर्व. १४।२।०१

मैं यह हूँ। तू वह है। तू वह है। मैं यह हूँ। मैं साम। तू ऋक् है। मैं द्यौ हूँ। तू पृथिवी है।

जिस प्रकार वृत्त के व्यास को तिगुना करके परिधि बनती है, उसी प्रकार स्त्री के जीवन से गुणित होकर पुरुष के जीवन का वितान बनता है। पुरुष के जीवन के घेरे में स्त्री व्यास के समान प्रतिष्ठित होती है। दोनों से मिलकर गृहस्थ जीवन का साम या संगीत बनता है। द्युलोक और पृथिवी के साथ पुरुष और स्त्री की उपमा देने का अर्थ यही है कि विश्व रचना के मूलभूत हेतु के समान वे दोनों द्विधा होते हुए भी जीवन के व्यापार में एक दूसरे के लिए अनिवार्य हैं। स्त्री के महत्व की इससे उच्चतर कल्पना और संभव नहीं कि स्वयं प्रजापति का अकेले मन नहीं लगा तो उसने अपने अर्ध भाग से स्त्री रूप में परिणित किया। जैसे ही विधाता की लेखनी विश्व की रहस्यमय कथा लिखने चली, वह दो फाँकों में बँट गई। एक वृक्ष था, उसमें दो डालें फूट निकलीं । एक बीज अंकुरित हो दुपतिया हो गया।

होतहि विश्वा भए दुई पाता।
पितासरग और धरती माता। (जायसी)

आकाश पिता और धरती माता है। यहाँ चाँद-सूर्य, दिन-रात, सृष्टि के सब द्वन्द्व एक दूसरे के संघाती बने। विश्व का यह विधान जीवन में सर्वत्र अंकित है। इसकी मूर्त्तिमयी व्याख्या गृहस्थ है। स्त्री पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं।

एक ही अण्डाकृति के दो आधे-आधे भाग हैं। एक आग्नेय और दूसरा सौम्य है। एक विद्युत और दूसरा चुम्बक है। एक दृढ़ और दूसरा सुकुमार है। दोनों एक ही तन्त्र के ताने बाने हैं। यही यहाँ की प्राचीन गृहस्थोपनिषत् है। विधाता की ब्रह्माण्डव्यापिनी प्रयोगशाला में पुरुष और स्त्री, वृषा और योषा, धन और ऋण विद्युत् के दो रूप हैं जिनके सम्मिलन से उत्पन्न होने वाला प्राण का नया स्फुलिंग ही बालक है। सृष्टि यज्ञ की यह कैसी मांगल्य विधि है। इसीलिए जब व्यक्ति के मन में विवाह का संकल्प आता है, तो उसके जीवन में नए विधान की

२४३, अरावली अपार्टमेन्ट (अलकनन्दा) नई दिल्ली ११००१९

❑❑❑

आचार्य हरिप्रसाद
'व्याकरणाचार्य'

वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर

सादर आमंत्रण

परमात्मा, आत्मा और प्रकृति के अनादि अस्तित्व को परिभाषित करते वैदिक त्रैतवाद के प्रकाशक व मनुष्य के सत्वगुण का उत्कर्ष करते हुए अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड के समस्त सात्विक ज्ञान को प्रकाशित करके त्रिपाप को दग्ध करने वाली परमात्मा की वेद वाणी के अनुपम उत्सव "वेद प्रचार सप्ताह" में आपका हार्दिक स्वागत है।

कार्यक्रम

दिनांकः ७ अगस्त से १२ अगस्त २०१२

यज्ञ - प्रातःकाल ७ से ७.४५ तक

प्रवचन - प्रातःकाल ७.४५ से ९ बजे एवं सायं ७ से ८.३० तक

स्थान - सत्संग सभागार, आर्य समाज हिरणमगरी सेक्टर- ४, उदयपुर

विशेष - रविवार १२ अगस्त को प्रातः ८ बजे से ११ बजे तक सत्संग रहेगा।

- निवेदक -

भँवरलाल आर्य
प्रधान

गिरीश जोशी
मंत्री

शास्त्रार्थ महारथी पंडित गणपति शर्मा

आओ स्मरण करें

पंडित गणपति शर्मा का जन्म भूतपूर्व बीकानेर स्टेट में चूरू शहर में विक्रमी संवत् २९३० (ई०सन् १८७३) में १५ अगस्त को पंडित भानीराम जी पाराशर गोत्रीय पारीक ब्राह्मण के यहाँ माताश्री सिणधरी बाई की कोख से हुआ। आपके पूर्वज जयपुर राज्य के सीकर जिले के नानी ग्राम के निवासी थे। पंडित गणपति शर्मा की प्रारम्भिक शिक्षा चुरू में हुई। उन दिनों चुरू, सीकर, झूंझनूं आदि शेखावटी की रियासतों में महर्षि दयानन्द के समकालीन तथा उनके प्रमुख शिष्य महात्मा कालूराम जी की धूम मची हुई थी। वे जनजागरण व सामाजिक चेतना के प्रतीक बन चुके थे। उनके उपदेशों से पंडित गणपति का महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों और वेदों की ओर झुकाव हुआ। आपने वेदों, व्याकरण तथा साहित्य में विशेष निपुणता प्राप्त की। आप शास्त्रार्थ-कला में विशेष दक्ष थे और आर्य जगत् के शास्त्रार्थ महारथी कहलाये। आपकी वाक्पटुता, ओजस्विनी वाणी तथा धारा प्रवाह वक्तृता की अद्भुत क्षमता के सभी कायल थे। आपके रोचक तथा अर्थगर्भित प्रवचन से श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो जाते थे।

ईस्वी सन् १८९२ में कश्मीर स्टेट में पादरी जानसन के साथ शास्त्रार्थ एक ऐतिहासिक व महत्वपूर्ण घटना है। भारत में अंग्रेजी राज होने के कारण पादरी कुछ ज्यादा ही हावी थे। वैसे कश्मीर तो किसी समय कैयट, वज्रट, मम्मट, कल्हण जैसे दिग्गज पंडितों की जन्मभूमि होने से सुविख्यात था किन्तु मुस्लिम आचार-विचार, खानपान, वेशभूषा का आधिक्य होने व पंडित अल्पसंख्यक हो जाने से उनका बोलबाला नाममात्र ही रह गया था। ऐसे में पादरी जानसन ने तत्कालीन महाराजा प्रतापसिंह के सामने पंडितों से शास्त्रार्थ का सशर्त प्रस्ताव रखा कि उसके विजयी होने पर दिग्विजयी होने का लिखित प्रमाण देना होगा तथा ईसाईयत उन्हें कबूल करनी होगी। कश्मीरी पंडितों से पादरी जानसन का शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ। उसके ऊल-जलूल, इधर-उधर के प्रश्नों से वहाँ के पंडित उलझन में पड़ गये। महाराजा भी संकट में थे क्योंकि शास्त्रार्थ उनकी उपस्थिति में हो रहा था। साथ ही कश्मीर के गौरव व अस्मिता का प्रश्न था। उस समय साधारण से कद, सांवले रंग तथा दुबले पतले से दिखने वाले नवयुवक पंडित गणपति शर्मा के खड़े होने से एक बार तो सभी स्तब्ध हो देखते ही रह गये। पादरी जानसन ने अहं भाव से,कौतूहल दृष्टि से उनकी ओर देखा। उस समय के प्रश्नोत्तर का वर्णन इस प्रकार हैः-

पंडित शर्मा के खड़े होते ही-

पादरी जानसन - आप हमसे शास्त्रार्थ करने आये हैं?

पंडित गणपति शर्मा- हाँ, पहले आप यह बताईये कि शास्त्रार्थ शब्द का क्या अर्थ है?क्या शास्त्र से आपका मतलब सांख्यादि छःशास्त्रों से है और क्या आपको यह भी ज्ञात है कि 'अर्थ शब्द के अनेक अर्थ हैं। अर्थ अर्थात् धन, अर्थ अर्थात् प्रयोजन, एक अर्थ पुरुषार्थ चतुष्टय में भी है। शास्त्र के भी अनेक अर्थ हैं- धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र, दर्शनशास्त्र आदि। आप बतायें कि आप किस शास्त्र का अर्थ करने आए हैं।

जानसन-(हतप्रभ होकर निरुत्तर हो गये। उक्त तार्किक प्रश्नों से उनकी मानो, पैरों तले से जमीन खिसक गई।) महाराजा ने हस्तक्षेप करते हुए पादरी की ओर मुखातिब होकर कहा-पादरी साहब, इनका उत्तर तो देना ही होगा। यह तो शुरूआत है।

किन्तु पादरी तो निरुत्तर हो मूक से खड़े रहे। ऐसे में, तब महाराजा के पंडित गणपति शर्मा को विजयी घोषित करते ही पंडित शर्मा की जय जयकार हो उठी।

महाराजा प्रतापसिंह ने बहुत प्रसन्न हो पंडित जी को पुरस्कृत करते हुए एक हजार राशि की थैली तथा कीमती शॉल भेंट किया। पर वाह रे पंडित गणपति शर्मा,आपने ससम्मान राशि की थैली लौटाते हुए नम्रतापूर्वक निवेदन किया कि आप तो कश्मीर में आर्य समाज की स्थापना की अनुमति प्रदान करें-आर्य समाज होने से कोई मुल्ला मौलवी तथा ईसाई पादरी आदि अन्य धर्मावलम्बी शास्त्रार्थ का चैलेंज देने की हिम्मत ही नहीं कर सकेगा।

पण्डित जी के अन्य प्रसिद्ध शास्त्रार्थ -

१.कोटा शास्त्रार्थ। २.झालावाड़ शास्त्रार्थ। ३.काशी के विद्वान् महामहोपाध्याय पंडित शिवकुमार शास्त्री से शास्त्रार्थ संबंधी भेंट। ४.कटक में उड़िया पंडितों से शास्त्रार्थ। ५.अजमेर में सनातनी पंडित जगत प्रसाद से शास्त्रार्थ

यद्यपि पंडित गणपति शर्मा राजस्थान के मूल निवासी थे, किन्तु आपका अधिकांश समय भारत भर में शास्त्रार्थों में व्यतीत हुआ। आर्यजनों के लिए गौरव की बात है कि चुरू की आध्यात्मिक एवं समाजसेवी संस्था'नगरश्री' ने विशेष प्रयास कर नगरपालिका उद्यान में प्रस्तर प्रतिमा स्थापित कर उनके गौरवमय जीवन को अक्षुण्ण बनाने के लिए प्रशंसनीय कार्य किया है, जिसका लोकार्पण प्रख्यात विद्वान् इतिहासवेत्ता तथा लेखक डॉ. भवानीलाल भारतीय ने किया।

भारत का रत्न, भारती का बड़ भागी भक्त,शंकर प्रसिद्ध सिद्ध सागर सुमति का।
मोहतम हारी ज्ञान पूषण प्रतापशील, दूषण विहीन शिरो भूषण विरति का।।
लोक हितकारी, पुण्य कानन-विहारी वीर, धीर धर्म धारी अधिकारी शुभ गति का।।
देख लो विचित्र चित्र, बांच लो चरित्र मित्र, नाम लो पवित्र, स्वर्गगामी गणपति का।।

आपका असामयिक अवसान मात्र ३९ वर्ष की आयु में २७ जून १९१२ को जगरांवा, (पंजाब) में हुआ था। आपकी धर्मपत्नी व पुत्र का निधन आपके जीवन काल में ही हो गया था। आपकी मातुश्री सिणधरी बाई को सम्मान स्वरूप पेंशन आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दी जाती रही।

- महेश सोनी, मंत्री, आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर

❑❑❑

AJAB DESH KI GAJAB KAHANI

We live in a nation where

1. Rice is Rs.40/- per kg and Sim Card is free.

2. Pizza reaches home faster than Ambulance and Police.

3. Car loan @ 5% but education loan @ 12%.

4. Students with 45% get in elite institutions thru quota system and those with 90% get out because of merit.

Think about it!

If you cross the the North Korean border illegally, you get ..... 12 years hard labor in an isolated prison ....

If you cross the Iranian border illegally, you get ..... detained indefinitely .....

If you cross the Afghan border illegally, you get ..... shot ......

If you cross the Saudi Arabian border illegally, you get ...... jailed

If you cross the Chinese border illegally, you get ..... kidnapped and may be never heard of again

If you cross the Venezuelan border illegally, you get ..... branded as a spy and your fate sealed ...

If you cross the Cuban border illegally, you get ..... thrown into a political prison to rot .....

If you cross the British border illegally, you get ..... arrested, prosecuted, sent to prison and be deported after serving your sentence .....

Now .... if you were to cross the Indian border illegally, you may get

❶ A ration card

❷ A passport (even more than one - if you please !)

प्रत्येक माह की २० तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया चलभाष ०६३१४५३५३७६ पर सम्पर्क करें।

5. Where a millionaire can buy a cricket team instead of donating the money to any charity.

2 IPL teams are auctioned at 3300 crores and we are still a poor country where people starve for 2 square meals per day.

6. Where the footwear we wear, are sold in AC showrooms, but vegetables that we eat, are sold on the footpath.

7. Assembly complex buildings are getting ready within one year while public transport bridges alone take several years to be completed.

8. Where we make lemon juices with artificial flavors and dish wash liquids with real lemon.

3 A driver's license
4 A voter identity card
5 Credit cards
6 A Haj subsidy
7 Job reservation
8 Special privileges for minorities
9 Government housing on subsidized rent
10 Loan to buy a house
11 Free education
12 Free health care
13 A lobbyist in New Delhi , with a bunch of media morons and a bigger bunch of human rights activists promoting your cause.
14 The right to talk about secularism, which you have not heard about in your own country !
15 And of-course ..... voting rights to elect corrupt politicians who will promote your community for their selfish interest in securing your votes !!!
16 and right to fight election for MLA or MP

Hats off ..... to the

A. Corrupt and communal Indian politicians

B. The inefficient and corrupt Indian police force

C. The silly pseudo-secularists in India ,who promote traitors staying here

D. The amazingly lenient Indian courts and legal system. That's why people like Afzal Guru are still alive, same will happen with Kasab.

E. We self centered Indian citizens, who are not bothered about the dangers to our own country.

F. The illogically brainless human-rights activists, who think that terrorists deserve to be dealt with by archaic laws meant for an era, when human beings were human beings.

-AN INTERNET ARTICLE

❑❑❑

श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर विशेष

कृष्ण जीवन की बाँसुरी के सात स्वर

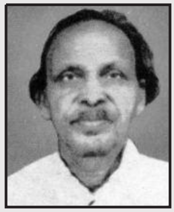

– आचार्य प्रेमभिक्षु (स्मृति शेष)

श्रीकृष्ण के विशेष गुण

(१) मानवता– श्रीकृष्ण योगेश्वर हैं, युगपुरुष हैं, क्रान्ति दूत हैं और महाभारत के महान् निर्माता। पर इन सबसे ऊपर वे आदर्श मानव हैं, महामानव! मनुष्यता से युक्त मनुष्य! महर्षि दयानन्द के शब्दों में–

'मनुष्य उसी को कहना जो कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुख और हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे, इतना ही नहीं किन्तु अपने सामर्थ्य से धर्मात्माओं की-चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुण-रहित क्यों न हों, उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सम्राट महाबलवान और गुणवान भी हो तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे। अर्थात् जहाँ तक हो सके वहाँ तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें, परन्तु इस मनुष्यपन रूपी धर्म से पृथक् कभी न होवे।'{सत्यार्थ प्रकाश-स्वमन्तव्यामन्तव्य}

श्रीकृष्ण ऋषि निर्दिष्ट मानवता के इस आदर्श की साक्षात् प्रतिमूर्ति हैं। वे निर्बल किन्तु धर्मात्मा पाण्डवों का पक्ष ग्रहण करते हैं, सबल किन्तु अधर्मात्मा कौरवों का विरोध करते हैं। उनके जीवन के सभी प्रसंगों में मानवता की यह छाप सुस्पष्ट है।

'दुर्योधन की मेवा त्यागी, साग विदुर घर खाये।'

मनीषी कवि मीर तकी ने कितना ठीक लिखा है–

''मीर साहब ग़र फरिश्ता हो तो हो। आदमी होना मगर दुश्वार है।''

अर्थात् फरिश्ता होना आसान है, इन्सान होना कठिन। श्रीकृष्ण सही अर्थों में मनुष्य थे। पर-दुख कातरता और आत्मीयता का सद्भाव मनुष्यों तक ही सीमित न था, पशु-पक्षियों तक के प्रति भी उनके आत्मवत् व्यवहार के कारण ही उनका एक प्यारा नाम 'गोपाल' पड़ गया था।

(२) ईश्वर-भक्ति – प्रभु भक्ति ही मानवता का आधार है। मानव को मानव बनाये रखने के लिये यह शक्ति-स्रोत है। सन्ध्योपासना, हवन और ओंकार-जप कृष्ण-जीवन के महत्वपूर्ण अंग हैं। वे हस्तिनापुर जाते हुए मार्ग में रथ रुकवाकर सन्ध्या करते हैं–

अवतीर्य रथात् तूर्णं कृत्वा शौचं यथाविधि। रथ मोचनमादिश्य सन्ध्यामुपविवेश ह ।। उद्योग ८४।२१

हस्तिनापुर में कौरव सभा में जाने से पूर्व सन्ध्या और अग्निहोत्र किया। कृष्ण की प्रभु-निष्ठा जानने के लिये आइये हम उनकी प्रातश्चर्या के दर्शन करें।

श्रीकृष्ण की प्रातश्चर्या– श्रीकृष्ण महाराज की प्रातःकाल की धार्मिक क्रिया महाभारत में इस प्रकार है–

कृत्वा पौर्वाह्नि कृत्यं स्नातः शुचिरलंकृतः। उपतस्थे विवस्विन्तं पावकं च जनार्दनः।।

श्रीकृष्ण भगवान शौचादि से निवृत्त हो गये और सूर्य का उपस्थान (सन्ध्या तथा अग्निहोत्र) किया। महाभारत में युधिष्ठिर की

प्रातश्चर्या भी इसी प्रकार की है। कृष्ण भगवान और युधिष्ठिर की प्रातश्चर्या में एक दृष्टव्य बात यह है कि कहीं भी शिव, विष्णु, काली, भैरव या अर्हन्त आदि की प्रतिमा का अर्चन-दर्शन करना नहीं पाया जाता। न किसी देव मन्दिर में जाने का उल्लेख है। उस समय के आर्य लोगों की धार्मिक क्रिया क्या थी? यह इन दो महापुरुषों की महाभारत जैसे प्रतिष्ठित ग्रन्थ में लिखी हुई क्रिया प्रमाण दे रही है।'

आज हमारा शिक्षित समाज या तो उपासना आदि से रहित है या गलत प्रकार की उपासना में समय नष्ट कर रहा है। महर्षि दयानन्द ने जो उपासना पद्धति रखी है वह श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर जैसे महापुरुषों से आचरित है। अतः आर्य जाति को 'रामधुन' 'मूर्तिपूजा' आदि अवैदिक उपासना का प्रकार छोड़कर शुद्ध वैदिक उपासना संध्याग्निहोत्र एवं वेदपाठ को अपनाना चाहिए।

(३) निर्भीकता - यह सच्चे प्रभु भक्त अथवा आदर्श मानव का प्रथम गुण है। निर्भीकता निष्पापता की उपज है। श्रीकृष्ण के प्रत्येक कार्य में निर्भीकता और आत्म सम्मान का भाव बना रहता था। दुर्योधन के भोज प्रस्ताव पर वे कितनी निर्भीकता से कहते हैं-

सम्प्रीति भोज्यान्यन्नानि आपद्भोज्यानि वा पुनः। न च सम्प्रीयसे राजन् न चैवापद्गता वयम्।। उद्योग ९१/२५

"राजन्! किसी के घर का अन्न दो कारणों से खाया जाता है- या तो प्रेम के कारण या आपत्ति पड़ने पर। प्रीति तो तुम में नहीं है, और संकट में हम नहीं हैं।"

कौरवों की सभा में चारों ओर शत्रुओं से घिरे रहने पर भी उन्होंने अपने आत्म सम्मान की रक्षार्थ और किसी भी प्रकार दुर्योधन के न मानने पर धृतराष्ट्र को सलाह दी-

राजन् दुर्योधनं बद्ध्वा ततः संशाम्य पाण्डवैः। त्वत्कृते न विनश्येयुः क्षत्रियाः क्षत्रियर्षभ।। उद्योग.१२८/५०

"राजन्! आप दुर्योधन को बाँधकर पाण्डवों से संधि कर लो। हे क्षत्रिय श्रेष्ठ! ऐसा न हो कि क्षत्रियों का विनाश हो जाए।"

श्रीकृष्ण की इस निर्भीकता के पीछे उनका अप्रतिम शौर्य और वीरता है। वे अपने समय के अद्वितीय वीर थे। महाभारत में श्रीकृष्ण की वीरता और शक्ति पूजा के अन्य कारणों के साथ ही भीष्म पितामह उनके शौर्य और पराक्रमों की भी बड़े उत्साह पूर्ण शब्दों में चर्चा करते हैं।

(४) निर्लोभता- कृष्ण जी ने राज्यक्रान्तियाँ कराईं परन्तु किसी लोभ लालच से नहीं। श्रीकृष्ण ने जो भी देश जीता उसे अपने आधीन करने की चेष्टा नहीं की और न उन्होंने किसी देश को जीतकर अपने भाई बन्धुमित्रादि को वहाँ का राजा बनाया। कंस का वध करके श्रीकृष्ण ने उसके पिता उग्रसेन को राज्य दे दिया। इसी भाँति जरासंध का वध करके उसके पुत्र सहदेव को राजा बनाया और भौमासुर को मारकर उसके पुत्र भगदत्त को राज्य पर नियुक्त किया। महाभारत का यह महान् सूत्रधार धरती के एक टुकड़े का भी शासक नहीं। क्या यह कृष्ण की निर्लोभता की पराकाष्ठा नहीं?

(५) शालीनता एवं आदर्श मैत्री भाव- श्रीकृष्ण के शील का पता इस बात से लगता है कि जब वे व्यास, धृतराष्ट्र, कुन्ती और युधिष्ठिर आदि बड़ों से मिलते थे, तो सदा उनके चरण छूते थे। देखिये-

कृष्णोऽहमस्मीति निपीड्य पादौ। युधिष्ठिरस्याजमीढस्य राज्ञः। आदि. १९०/२०

'मैं कृष्ण हूँ' ऐसा कहकर उन्होंने युधिष्ठिर के चरणों को स्पर्श किया।

नम्रता और सहिष्णुता भी शालीनता के ही अंग हैं। राजसूय यज्ञ में श्रीकृष्ण ने ब्राह्मणों की पूजा की और उनके चरण धोने का कार्य अपने ऊपर लिया। यह उनकी नम्रता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

कृष्ण सहिष्णुता के साकार स्वरूप थे। कंस के अत्याचार झेले। जरासन्ध के प्रहार और शिशुपाल की वचन रूपी तलवार के कठोर वार सहे, परन्तु श्रीकृष्ण अडोल रहे। शिशुपाल द्वारा युद्ध का आह्वान मिलने पर ही श्रीकृष्ण ने उसका शिरोच्छेदन किया।

सुदामा के प्रसंग में श्रीकृष्ण ने मैत्री का जो आदर्श प्रस्तुत किया है वह न जाने कितने मानव प्राणों की प्रेरणा का आधार रहा है। कविवर नरोत्तम दास ने बड़ी ही मनोरम और हृदयग्राही शैली में इसका चित्रण किया है। उसमें से यदि अत्युक्ति,

चमत्कारवाद और अलौकिकता के अंश को छोड़ दिया जाए तो सच में यह अत्यधिक स्पृहणीय बन पड़ा है। सिर्फ एक चित्र देखिये। सुदामा ज्यों त्यों करके द्वारिकापुरी में श्रीकृष्ण के महलों तक पहुँच गये हैं। द्वारपाल श्रीकृष्ण को समाचार देता है-

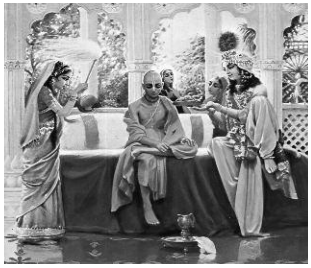

सीस पगा न झगा तन में प्रभु जाने को आहि बसे केहि ग्रामा।
धोती फटी सी लटी दुपटी अरु पांय उपानह की नहिं सामा।।
द्वार खड्यो द्विज दुर्बल देखि रह्यो चकिसों वसुधा अभिरामा।
पूछत दीन दयाल को धाम बतावत आपनो नाम सुदामा।।

सुदामा का नाम सुनते ही-

बोल्यो द्वारपालक 'सुदामा' नाम पाड़ि सुनि। छांड़े राज काज ऐसे जी की गति जानै को?
जैसी तुम कीन्हीं तैसी करें तो कृपा के सिन्धु। ऐसी प्रीति दीनबन्धु! दीनन पै आने को।।

कृष्ण सुदामा को महलों में ले जाते हैं। अपने मित्र की यह दशा देखकर वे बिलख पड़ते हैं-

ऐसे बिहाल बिवाइन सौं पग कटंक जाल लगे पुनि जोये। हाय महादुख पायो सखा! तुम आये इतै न कितै दिन खोये।
देखि सुदामा की दीन दशा करुणा करिके करुणानिधि रोये। पानी परात कौ हाथ छुऔ नहि नैनन के जल सौं पग धोये।।

धन्य! धन्य! शौर्य व शील का यह समन्वित आदर्श मेरा प्यारा कृष्ण अमर है!

(६) नीतिमत्ता- श्रीकृष्ण की नीतिमत्ता महाभारत के पृष्ठ-पृष्ठ पर अंकित है। नय सागर कृष्ण ही अर्जुन की वास्तविक शक्ति हैं। अभिमन्यु वध से संक्षुब्ध हो अर्जुन सूर्यास्त से पूर्व ही जयद्रथ वध करने अन्यथा स्वयं अग्नि में जलने की प्रतिज्ञा कर बैठता है। युग कवि गुप्त जी के शब्दों में इस प्रसंग का एक चित्र देखिये-

अत्यन्त रोषावेग में तुमने किया है प्रण कड़ा। अब यत्न क्या इसका सखे! यह कार्य है दुष्कर बड़ा।।
यों सुन वचन गोविन्द के निर्भय धनञ्जय ने कहा- हैं आप यों विह्वल मन, आश्चर्य है मुझको महा।
निश्चय मरेगा कल जयद्रथ प्राप्त होगी जय मुझे। हे! देव मेरे यत्न तुम हो मत दिखाओ भय मुझे। (जयद्रथ वध)

रथ का पहिया निकाले हुए जब कर्ण ने तीर तानते अर्जुन को धर्म की दुहाई दी तो नीतिज्ञ कृष्ण जो अभी-अभी अर्जुन की भोली उदारता को देख चुके थे, बोले-

यद् द्रौपदीमेकवस्त्रां सभाया मानाययेस्त्वं च सुयोधनश्च। दुःशासनः शकुनिः सौबलश्च न ते कर्ण प्रत्यभात्तत्रा धर्मः।। कर्णपर्व ९१।।२।।

ओ कर्ण! जिस समय तुम, दुःशासन, शकुनि और सौबल सब मिलकर ऋतुमती एकवस्त्रा द्रौपदी को घसीट लाये थे उस समय तुम्हें धर्म की याद नहीं आई और -

यदाभिमन्युं बहवो युद्धे जघ्नुर्महारथाः। परिवार्य रणे बालंक्व ते धर्मस्तदा गतः।। कर्ण पर्व ९१/११

जब तुम बहुत से महारथियों ने मिलकर अकेले अभिमन्यु को घेरकर मार डाला था उस समय तुम्हारा धर्म कहाँ गया था?अरे क्षत्रिय धर्म को जानने का अभिमान करने वाले तुम भी तो उनमें सम्मिलित थे। इतना कहकर उन्होंने अर्जुन को आदेश दिया कि इस प्रकार दल-दल में फँसे हुए कर्ण का वध करना पुण्य है। यह है कृष्ण की नीतिमत्ता का ज्वलंत उदाहरण!

(७) सदाचार एवं नैतिकता- परन्तु हम भूलें नहीं कि कृष्ण की नीतिमत्ता का आधार सदैव ही नैतिकता का दिव्य आदर्श था। श्रीकृष्ण का सम्पूर्ण जीवन नैतिकता के आधार पर प्राणिमात्र का सुख चिन्तन करते हुए व्यतीत हुआ, अन्तिम बार श्रीकृष्ण एक विकट धर्म-संकट में फँस गये। उनके ही बन्धु-बान्धव एवं परिवार के सदस्य और सजातीय उद्दण्ड हो गये। विश्व में वे घोर अशान्ति का कारण बनते जा रहे थे। जीवन पर्यन्त श्रीकृष्ण ने विश्व कल्याण किया। इस बार भी वे न चूके। यादव कुल का अपने देखते-देखते अपने ही हाथों से उन्होंने अन्त करा दिया।

विवाह के आरम्भिक १२ वर्षों में कठोर ब्रह्मचर्य व्रत का धारण श्रीकृष्ण के संयम और सदाचारमय उच्चादर्श का बोलता हुआ प्रमाण है। स्पष्ट है कि गोपी-प्रसंग, राधा-रमण, कुब्जा-संभोग आदि की पापपूर्ण कथायें स्वयं पुराणकारों के मनस्पाप का प्रतिफल हैं।

यह वेंत की वंशी के नहीं, कृष्ण-जीवन की बाँसुरी के मस्ताने सात स्वर हैं, जो युगों-युगों से प्रभु भक्तों और देश भक्तों को

मस्त करते रहे हैं। उन्हें वैयक्तिक, पारिवारिक और सामाजिक जीवन के बीच समन्वय का पाठ पढ़ाते रहे। यह है कृष्ण का सच्चा स्वरूप! यह है एक दृष्टि में महाभारत के कृष्ण की एक झाँकी!! यह है आर्य समाज का कृष्ण!!

यहाँ हमने संक्षिप्त रूप से श्रीकृष्ण महाराज के जीवन और इनकी जीवन घटनाओं पर महाभारत के आधार पर विचार किया है। इससे यह सिद्ध है कि कितनी विषम परिस्थितियों को आपने पार किया। ऐसे कर्मयोगी, परोपकारी महापुरुष का जीवन आज हम किस दृष्टि से देख रहे हैं? हमने उस देश-हितैषी, धर्म-संस्थापक को किस रूप में ग्रहण किया है? भक्ति की छलना से आज हमने उस महापुरुष को क्या बना डाला है? यह विचारणीय है, शोच्य है। ❑❑❑

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके,एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) की द्वितीय आवृत्ति छपने में है। कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थ प्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया,उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518 में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास
भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री
डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

जिन सज्जनों को यह पत्रिका प्राप्त हुई है, वे तो अवश्य ही 'सत्यार्थ - सौरभ' परिवार से तुरन्त जुड़ने की कृपा करें।

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ-सौरभ (₹ ११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आशा आर्या एवं

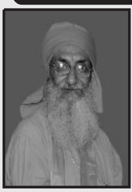
स्वामी (डॉ.) [illegible] सरस्वती [illegible]

स्वामी प्रकाशानन्द सरस्वती [illegible] गुजरात

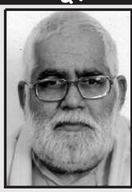
स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती दिल्ली

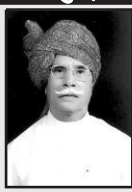
श्रीयुत् राव हरिश्चन्द्र जयपुर

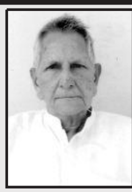
श्री दीपचंद आर्य [illegible]

श्री रघुनाथ मित्तल [illegible]

श्री [illegible] आर्य [illegible]

श्री अवण कुमार गुप्ता गुड़गाँव

प्रो. आर.के. ऐरन उदयपुर

श्री ललन सराफ [illegible]

श्री [illegible] आर्य कोलकाता

श्री कृष्ण चोपड़ा यू.के.

श्री नरेश कुमार राणा नई दिल्ली

श्रीमती पुष्पा गुप्ता उदयपुर

श्री विजय तायलिया उदयपुर

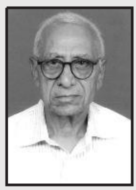
श्री वीरेन्द्र मित्तल उदयपुर

श्री मोती लाल आर्य [illegible]

"[illegible]" श्रीमती सरोज वर्मा जयपुर

प्रो. आई. जे. भाटिया नासिक

श्री राजकुमार गुप्ता एवं श्रीमती सरला गुप्ता उदयपुर

गुप्त दान उदयपुर

आर्य समाज गाँधीधाम गुजरात

गुप्त दान नई दिल्ली

‘क्या मनुष्य का अगला जन्म मनुष्य का ही होगा?’

मृत्यु के पश्चात् जन्म अर्थात् पुनर्जन्म तर्कों व युक्तियों से सिद्ध है। यह वेद आदि शास्त्रों से समर्थित व पुष्ट भी है। ऐसे भी लोग हैं, जो यह शंका करते हैं कि मृत्यु के पश्चात् मनुष्य का जन्म मनुष्य का ही हो सकता है एवं जो प्राणी जिस योनि में होता है उसका जन्म-पुनर्जन्म भी उसी योनि में होता है। ऐसे बन्धुओं से वार्तालाप करने पर यह बात भी सामने आती है कि अनेक शिक्षित बन्धु मांसाहार को बुरा नहीं मानते और कहते हैं कि सृष्टि के आदि काल से ही मनुष्य मांसाहारी थे। एक बात और सुनी कि हमारे पूर्वज अज्ञानी थे और ज्ञान का प्रादुर्भाव अथवा विकास शनैः शनैः हुआ। अब एक-एक करके इन विषयों पर विचार करते हैं।

मनमोहन कुमार आर्य

क्या मनुष्य का अगला जन्म मनुष्य का ही होगा? इस विचारधारा के लोग कहते हैं कि जिस प्रकार जिस उपज या वृक्ष का बीज होगा वही वृक्ष व उपज एवं वनस्पति पैदा होती है। इसी प्रकार मनुष्य का जन्म भी केवल मनुष्य का ही हो सकता है। हम जड़ शरीर व चेतन आत्मा की सम्मिलित एक प्राणधारी सत्ता हैं। जड़ शरीर पृथिवी, अग्नि, जल, वायु व आकाश इन पाँच तत्वों से मिलकर बना है। जीवात्मा एक चेतन, अल्पज्ञ, अविकारी, शाश्वत व सनातन, एकदेशी, जन्म-मरणधर्मा, कर्मों का स्वतन्त्र-कर्त्ता व फलों का भोक्ता आदि गुणों वाला है। मृत्यु के बाद मनुष्य जीवधारी को मनुष्य-जन्म, मनुस्मति के अनुसार, तब मिलता है यदि उसके अच्छे कर्म बुरे कर्मों से अधिक हों। आधे से अधिक अच्छे कर्मों वालों को मनुष्य योनि व आधे से कम अच्छे कर्म वालों को पशु, पक्षी आदि निम्न योनियाँ प्राप्त होती हैं। आईये इस सिद्धान्त व मान्यता की परीक्षा करते हैं। आधे से अधिक अच्छे कर्म यदि मनुष्य करेगा तो उसे मनुष्य योनि ही प्राप्त होगी, यह मान्यता तो आलोचक बन्धु के अनुरूप है। यदि किसी मनुष्य के अधिकांशतः कर्म बुरे या निन्दित कोटि के हैं, अच्छे कर्म बहुत कम हैं, यदि वह मत्यु के पश्चात् पुनर्जन्म में मनुष्य ही बने तो यह सिद्धान्त तर्क व बुद्धि पर जमता नही है। यदि जीवात्मा मनुष्य जन्म में कितना ही बुरा कर्म करे फिर भी यदि वह अगले जन्म में मनुष्य ही बनता है तो इस सिद्धान्त में त्रुटि प्रतीत होती है। इसका कारण है कि संसार में जितने भी जीवधारी प्राणी हैं उनमें मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। सर्वश्रेष्ठ योनि के लिए कर्मों का सर्वश्रेष्ठ होना भी आवश्यक है। यदि बिना श्रेष्ठ कर्मों के किसी को श्रेष्ठ योनि दी जाती है वा मिलती है तो यह अनुचित व अतार्किक सिद्धान्त हुआ। इस संसार का रचयिता, संचालक, व्यवस्थापक, संहारक यदि ऐसा अतार्किक सिद्धान्त संसार में प्रवृत्त या व्यवहार करता है तो उसकी सत्ता सन्देह के घेरे में आ जाती है, परन्तु ऐसा नहीं है। हम संसार में एक सुव्यवस्था, नियम, अनुशासन, न्याय पर आधारित व्यवस्था देख रहे हैं। अतः हर अवस्था में मनुष्य जीवधारी को मनुष्य की ही योनि में जन्म मिलने का सिद्धान्त कसौटी पर सही नहीं ठहरता है। सामाजिक जीवन में भी इस मान्यता की स्थिति पर विचार करते हैं। माता-पिता अपनी सन्तानों को अच्छी शिक्षा देकर उनसे अपेक्षा करते हैं कि वह समाज में अच्छे काम करें जिनसे माता-पिता के नाम पर धब्बा न लगे एवं वह शिर ऊँचा करके जीवन व्यतीत कर सकें। ऐसा भी देखने में आता है कि माता-पिता अपनी सन्तानों के गलत कामों के कारण लज्जित होते हैं। वह अपनी सन्तानों को फटकारते हैं। उन्हें बुरा-भला कहते हैं जिससे उनका सुधार हो सके। कई माता-पिता तो अपनी सन्तानों से सम्बन्ध भी विच्छेद कर लेते हैं। एकाधिक घटनाएँ-ऐसी भी हो जाती हैं कि माता-पिता ने अपनी सन्तान के बुरे कामों से लज्जित होने के कारण, दोनों या किसी एक ने, आत्म-हत्या कर ली या करने का प्रयास किया।

यह क्या प्रदर्शित करता है कि कई बार व्यवस्थापक, संचालक, न्यायकर्ता व माता-पिता अपनी सन्तानों से इतने अपमानित से हो जाते हैं कि असहाय होकर, सन्तान को सजा न दे सकने व सुधार न कर सकने के कारण वह दुःखी, अपमानित व लज्जित हो जाते हैं और सम्बन्ध विच्छेद व आत्महत्या जैसा पतित कार्य भी करते हैं। माता-पिता आदि क्योंकि शरीरधारी व अल्पशक्तिमान् हैं, अतः वह ऐसा करते हैं। परन्तु इस संसार का रचयिता व संचालक तो सर्वशक्तिमान् है, वह तो हर प्रकार से जीवधारी मनुष्य को प्रताड़ित व दण्डित कर उसका सुधार कर सकता है। सुधार करने के लिए मनुष्य जीवधारी को पशु या पक्षी व अन्य नीच योनियों में भेजना भी आवश्यक है, अतः यह सिद्धान्त सही ठहरता है कि मनुष्य जीवधारी को उसके अनुचित व पतित कार्यों के लिए दण्डित किया जाये और आवश्यकता होने पर उसे मनुष्येतर योनियों में भी भेजा जाये।

इस विषय में हम यह भी कहना चाहते हैं कि हमारे हिन्दू समाज में मध्यकाल में जन्मना जाति व्यवस्था का प्रचलन हो गया था। जो व्यक्ति जिस वर्ण में पैदा हो गया वही उसकी जाति मान ली गई, चाहे वह अच्छे कार्य करे वा निकृष्ट कार्य करे। परिणाम क्या हुआ कि समाज कमजोर हो गया और उच्च वर्ग ने अपने से निम्न वर्गों व वर्णों एवं जन्मना निम्नजाति वालों पर अत्याचार किए जिससे समाज अस्वस्थ होकर नाश की स्थिति में आ गया। सौभाग्य से उन्नीसवीं सदी में गुजरात में जन्मे महर्षि दयानन्द ने इन रोगों को मूल कारण सहित समझा और इसका उपचार भी जाना तथा देशवासियों को इसका स्वरूप बताकर जन्मना-जाति व्यवस्था का त्याग कर गुण-कर्म-स्वभाव पर आधारित वर्णव्यवस्था को अपनाने व व्यवहार करने का आह्वान किया। इसका आंशिक असर हुआ और आज का समाज उन्नीसवीं शताब्दी से उन्नत व समृद्ध है। अभी भी इस समस्या के सुधार के लिए और प्रयास किये जाने हैं। वस्तुतः जब गुण-कर्म-स्वभाव पर आधारित वर्णव्यवस्था का पूर्णतः पालन होगा तब ही देश-विदेश में सर्वत्र एक स्वर्णिम युग का सूत्रपात होगा। यह सामर्थ्य केवल वैदिक मान्यताओं एवं व्यवस्थाओं में है। एक वर्ग स्वार्थ व अज्ञान के कारण इसका विरोध करता है। परन्तु ऐसा कब तक करेगा?हर बुरी चीज का अन्त होना तो

निश्चित व स्वाभाविक है। जन्मना-जाति व्यवस्था एवं अज्ञान पर आधारित मूर्ति-पूजा, मृतक श्राद्ध, अस्पृश्यता, असमान व सशुल्क शिक्षा व्यवस्था, वैदिक नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का शिक्षा में अभाव व पाश्चात्य भौतिकता व भोगवादी मूल्यों के प्रभुत्व का अन्त हुए बिना स्वर्णिम युग नहीं आ सकता। हम जानते हैं कि अज्ञान का नाश हो जाने पर स्वर्णिम युग प्रारम्भ होता है, हम उसी ओर धीरे-धीरे बढ़ रहे हैं और मंजिल पर अवश्य पहुँचेंगे।

जिस प्रकार निम्नवर्गों के लोगों को अच्छे कार्यों के करने पर उन्नति करने का अधिकार है उसी प्रकार निम्नयोनि यथा, पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि को भी इन योनियों में रहकर अपने बुरे कर्मों की सजा भोग लेने पर, सजा समाप्ति पर, मानव योनि में जाकर अच्छे कार्यों को कर उन्नति करने का अधिकार है। यदि यह फिर मानव योनि का दुरुपयोग करते हैं तो इन्हें सुधार के लिए फिर निम्नयोनियों में जन्म देना न्यायसंगत है एवं ईश्वर ऐसा करता है जिसकी पुष्टि वेद आदि प्रमाणित ग्रन्थों से होती है। जन्मना जाति के सम्बन्ध में हम यह भी जानलें कि संसार के सभी मनुष्य की जाति एक है जिसे मनुष्य या मानव कहा जाता है। संस्कृत वैदिक साहित्य में जिन योनियों का प्रसव समान है उनकी एक ही जाति कही जाती है। संसार के सभी मनुष्यों का क्योंकि प्रसव एक समान है अतः सबकी जाति एक ही है। नाना प्रकार की, निम्न व उच्च, जातियों का प्रचलन या तो अज्ञान के कारण हुआ या फिर बड़े वर्ग व जाति के लोगों के स्वार्थ के कारण हुआ। इस प्रथा को प्रचलित करने वाले क्योंकि बहुत पहले संसार से विदा हो गये और उनको ईश्वर की व्यवस्था से उनके कर्मों का दण्ड मिल गया है, अतः अब समाज के लोगों को मिलकर इस प्रथा का उन्मूलन कर देना चाहिये। दुःख की बात है कि अपने किन्हीं स्वार्थों के कारण आज निम्नवर्ग भी जाति प्रथा को समाप्त करना नहीं चाहता।

हमारे बहुत से मित्र यह मानते है कि आदि-कालीन मनुष्य अर्थात् हमारे भारतीय पूर्वज मांसाहारी थे। इस मान्यता का आधार यह है कि यह लोग मानते हैं कि आदिकाल में मनुष्य ज्ञानहीन व अविवेकी थे इस कारण वह खाद्य व अखाद्य पदार्थों में अन्तर नहीं कर सकते थे। ऐसे लोगों के अनुसार बहुत बाद में उनको ज्ञान प्राप्त हुआ और तब उन्होंने अपनी व्यवहार व ज्ञानशक्ति से खाद्य व अखाद्य पदार्थों का अन्तर जाना। अतः अज्ञान की अवस्था में उन लोगों को पशु, पक्षी आदि जो भी नजर आते थे, भूख लगने पर वह उन्हें मारकर कच्चा या अग्नि में जला वा भूनकर या पका कर खा जाते थे और नदियों व स्रोतों का जल पीकर अपनी पिपासा शान्त करते थे। हमारे मित्रों की यह धारणा उनके वैदिक ज्ञान-शून्य होने के कारण है। वेदों के अनुसार आदि या आरम्भिक मनुष्य अज्ञानी नहीं थे। उन्हें वेदों का ज्ञान मिला था। उससे वह भाषा बोल सकते थे और वेदों की शिक्षाओं के अनुसार उन्हें खाद्य व अखाद्य भोज्य पदार्थों का ज्ञान था। वह केवल शाकाहारी भोजन ही करते थे जिसमें प्रचुरता एवं सरलता से उपलब्ध गो आदि पशुओं का दुग्ध, फल एवं वनस्पतियाँ होती थीं। समाधान मात्र इस प्रश्न का करना है कि आदि मनुष्यों को आरम्भ में ज्ञान कहाँ से, कैसे प्राप्त हुआ? इस तथ्य से जुड़े प्रमाण काफी रोचक व आँखें खोलने वाले हैं। यह संसार किसने बनाया, मनुष्यों को किसने उत्पन्न किया, वह कहाँ है ?दिखता क्यों नहीं आदि?आईये इन प्रश्नों का उत्तर खोजते हैं?सर्वप्रथम संसार व प्राणीजगत् की रचना को देखकर विचार करने पर एक अनादि, अजन्मा, अनन्त, अमर, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी सत्ता का ज्ञान होता है जो कि सच्चिदानन्दस्वरूप अर्थात् सत्य, चित व आनन्दस्वरूप है। यदि वह न होती और यदि वस्तुतः अब भी नहीं है, तो यह दृश्य जगत् वा सृष्टि उत्पन्न हो ही नहीं सकती थी। इस सृष्टि का अस्तित्व उस सत्ता के होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है। उस सत्ता को इस सृष्टि को बनाने से पहले भी अनेकानेक बार ऐसी ही सृष्टि बनाने का ज्ञान व अनुभव होना आवश्यक है ।

यदि यह सृष्टि पहली बार बनी है, इससे पूर्व कभी नहीं बनी, तो उस सत्ता पर कई दोष उत्पन्न होते हैं। पहली बार कोई भी कार्य करे तो उसमें परफैक्शन या पूर्णता नहीं आ पाती। बाद में अनेक स्तरों पर सुधार किया जाता है और काफी बाद में वह पूर्णता के निकट आती हैं। {प्रभु पूर्ण हैं उनकी प्रत्येक सृष्टि में कोई न्यूनता नहीं बदलाव/सुधार भी नहीं} दूसरा प्रमुख आरोप यह भी लगता है कि जब वह सत्ता अनादि व अजन्मा है तो वह सृष्टि बनाने के पहले के सुदीर्घ, अनन्तकाल में क्या निकम्मी बैठी थी?इस प्रश्न का उत्तर इस सृष्टि को देखकर स्वयं ही मिल जाता है। इस सृष्टि रचना में क्योंकि परफैक्शन व पूर्णता है, न्यूनता बिल्कुल नहीं है, अतः यह सिद्ध है कि इस सृष्टि से पहले भी असंख्य बार यह सृष्टि बनी है। इससे सृष्टि का रचयिता सर्वज्ञ अर्थात् ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण सिद्ध व प्रमाणित होता है।

हमारे पूर्वजों, ऋषियों व विद्वानों ने इस सृष्टि को रचने वाली चेतन शक्ति को ईश्वर, परमेश्वर, परमात्मा आदि अनेक नामों से उल्लिखित किया है व उसकी स्तुति व प्रार्थनायें की हैं। अब पहला प्रश्न, मनुष्यों को ज्ञान कहाँ से मिला?उत्तर है कि आदि मनुष्यों की पहली पीढ़ी के हमारे पूर्वजों को आरम्भ में ही समस्त आवश्यक ज्ञान सृष्टिकर्ता ईश्वर से उनकी उत्पत्ति होने के साथ मिला। जब उस सृष्टिकर्त्ता ने अपनी सर्वज्ञता व पूर्णज्ञानी होने से सृष्टि की रचना की व मानव व अन्य योनियों के प्राणियों को उत्पन्न किया तो उसके लिए मनुष्य को ज्ञान प्रदान करना किंचित भी कठिन कार्य नहीं था। यदि इस तर्क, युक्ति व मान्यता को नहीं मानेंगें तो उस ईश्वर के सर्वज्ञता व सर्वशक्ति सम्पन्न होने में दोष आ जाता है। और यदि हम यह मानते हैं कि ईश्वर सृष्टि के आरम्भ में आदि मनुष्यों को ज्ञान नहीं दे सकता वा देता है तो फिर जिस सृष्टि में हम रह रहे हैं, उस सृष्टि का अस्तित्व ही न होता। संसार के रचयिता सृष्टिकर्त्ता ने पहली पीढ़ी के आदि मनुष्यों को स्वाभाविक ज्ञान दिया था जिससे वह अपना कार्य सरलता से कर सकते थे।

ईश्वर ने चार आदि मनुष्यों - अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को क्रमशः चार वेदों, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद का ज्ञान दिया था। यह चारों वेदज्ञान सब सत्यविद्याओं से परिपूर्ण हैं एवं इन चार वेदों की मन्त्र संहितायें सब सत्यविद्या के पुस्तक हैं। इन चार वेदों का ज्ञान

अर्थ सहित दिया गया था। इससे सिद्ध है कि भाषा का ज्ञान भी परमात्मा ने उन ऋषियों को दिया था क्योंकि ज्ञान विना भाषा के नहीं होता। भाषा व ज्ञान, परस्पर सन्निहित, एक दूसरे पर अवलम्बित व आश्रित होते हैं। इन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। यह ज्ञान व भाषा उन आदि मनुष्यों व ऋषियों के अन्तःकरण में ईश्वर द्वारा अन्तर्यामीस्वरूप से एक समय में एक साथ दिया गया। आज भी ईश्वर शुद्ध हृदय के व्यक्तियों में बुरे कामों का विचार आने पर भय, शंका, लज्जा व अच्छे कामों का विचार आने पर निर्भयता, निःशंकता, आनन्द व उत्साह उत्पन्न करता है। अतः उस कूटस्थ व आत्मस्थ परमात्मा के लिए सृष्टि के आदि में मनुष्यों को ज्ञान देना कोई कठिन व असम्भव कार्य नहीं है। हाँ, यदि वह ऐसा न करता तो उस पर दोष आता कि उसने मनुष्य आदि प्राणियों को उत्पन्न तो किया परन्तु ज्ञान नहीं दिया। यह उसी प्रकार होता है जिस प्रकार सभी अनपढ़ माता-पिता अपनी सन्तानों को शिक्षित करने का भरसक प्रयत्न करते हैं। फिर ईश्वर तो हम सबका माता-पिता-बन्धु-सखा है। क्या वह सर्वज्ञानी पिता हमें अज्ञानी रहने दे सकता है? यह भी एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि यदि ईश्वर सृष्टि की आदि में मनुष्यों को ज्ञान न देता तो मनुष्य सदा-सदा के लिए अज्ञानी ही रहते क्योंकि मनुष्य भाषा उत्पन्न नहीं कर सकते, ज्ञान उत्पन्न करने का तो प्रश्न ही नहीं है। इस विषय पर हमने अपने पूर्व लेखों में अनेक बार लिखा है और इसके पक्ष में युक्तियाँ, तर्क व प्रमाण दिये हैं। अतः यह सिद्ध है कि ईश्वर ने सृष्टि रचकर मनुष्यों को उत्पन्न किया और उन्हें भाषा सहित चारों वेदों का ज्ञान भी दिया।

ईश्वर कहाँ है और दिखता क्यों नहीं?इस प्रश्न का उत्तर भी अब हमें मिल जाता है कि ईश्वर एक अत्यन्त सूक्ष्म एवं सर्वान्तर्यामी सत्ता है। वह इस पूरे ब्रह्माण्ड में व्यापक है एवं सर्वत्र विद्यमान है। पूरे ब्रह्माण्ड में ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ ईश्वर नहीं है। इस बात को यजुर्वेद के ४०वें अध्याय का पहला मन्त्र भी कहता है कि 'ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यांजगत्।' अर्थात् ईश्वर इस जड़ व चेतन जगत् में सर्वत्र व्यापक व ओतप्रोत है। वह दिखता इसलिए नहीं है क्योंकि वह अत्यन्त सूक्ष्म, निराकार, सर्वव्यापक एवं सर्वान्तर्यामी है। हम अपनी आत्मा, वायु व आकाश को भी तो नहीं देखते परन्तु हम उन्हें अनुभव से जानकर स्वीकार करते हैं एवं मानते हैं तथा उसमें शंका नहीं करते। यह भी एक नियम है कि बहुत बड़ी, बहुत छोटी और बहुत पास की वस्तुएँ दिखाई नहीं देतीं। ईश्वर भी बहुत बड़ा, बहुत दूर व बहुत पास भी है, अतः आँखों से दिखाई नहीं देता। ऐसे ही ज्ञानी व विवेकी मनुष्य भी ईश्वर को अपने ज्ञान-चक्षुओं व आत्मा से प्रत्यक्ष अनुभव करके व जानकर निःशंक हो जाते हैं और अपने ज्ञानपूर्वक विश्वास से ईश्वर को मानते हैं वा उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना करते हैं व सबको ऐसा ही करना चाहिये।

❑❑❑

संरक्षक सदस्य ११००० रु.	आजीवन सदस्य १००० रु.	विशिष्ट सदस्य ५ वर्ष ४०० रु.	वार्षिक सदस्य १०० रु.

अनुकरणीय उदाहरण

बाबू मिठाईलाल सिंह

श्री विजय शर्मा, प्रधान आर्य समाज भीलवाड़ा एवं उपाध्यक्ष न्यास, जो कि स्वयं एक उद्योगपति हैं, ने भीलवाडा के २०० टैक्सटाइल इंडस्ट्रीज के मालिकों को अपनी ओर से सदस्यता शुल्क देकर सत्यार्थ-सौरभ का सदस्य बनाया है। इस प्रकार वैदिक विचारधारा से संपृक्त, शारीरिक, आत्मिक एवं सामजिक उन्नति को समर्पित इस पत्रिका को आर्यसमाजेतर परिवारों में प्रवेश का अवसर प्राप्त हुआ है। वैदिक विचारधारा के प्रसार हेतु यह अभिनव एवं सकारात्मक प्रयोग है। इसी प्रकार माननीय बाबू मिठाईलाल जी ने ५०० अभिभावकों को सदस्य बना ऐसा कार्य किया है कि जिसकी जितनी भी प्रशंसा की जाय कम है । इन दोनों आत्मीय स्वजनों को हमारी और सत्यार्थ-सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक धन्यवाद।

श्री विजय शर्मा

समाचार

चुनाव निर्विरोध सम्पन्न

नीमच, आर्य समाज के वर्ष २०१२-१३ के चुनाव निर्विरोध सर्वानुमति से हुए जिसमें- प्रधान श्री अर्जुनलाल नरेला, उप-प्रधान कन्हैयालाल रतावदिया व श्री सुदामा रामनानी, मंत्री- श्री मनोज स्वर्णकार, उपमंत्री- श्री सुरेश चन्द्र शर्मा, कोषाध्यक्ष-श्री चन्द्रप्रकाश शर्मा, पुस्तकाध्यक्ष- जगदीश प्रसाद हरित, अंतरंग सदस्य- १.श्री भगवत शरण वर्मा २. श्री हस्तीराम भाटी ३.श्री कालू सिंह राठौर निर्वाचित हुए।

–मनोज स्वर्णकार, मंत्री आर्य समाज, नीमच

दिनांक १ जुलाई २०१२ को माता लीलावन्ती सभागार में मासिक सत्संग के अवसर पर धर्मोपदेश करते हुए आचार्य अर्जुन देव वर्णी।

शोक सभा– गत माह दो विशेष दुखान्तिकाएँ हुईं। डॉ. वेदप्रताप वैदिक के पूज्य पिता तथा न्यास से अत्यन्त आत्मीय संबंध रखने वाले, महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के प्रति पूर्णतः समर्पित पूज्य स्वामी वैदिकानन्द जी सरस्वती का निधन २४-६-१२ को हो गया। न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष ने सभा में पूज्य स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उसे सभी के लिए अनुकरणीय बताया।

आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर द्वारा संचालित दयानन्द कन्या विद्यालय के मानद निदेशक आर्य समाज के वरिष्ठतम सदस्य श्री जितेन्द्र पाल शर्मा (पाल साहब) का निधन दिनांक २७-०६-२०१२ को हो गया। डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने उनके जीवन के विभिन्न संस्मरणों को सभा में प्रस्तुत किया। मौन श्रद्धांजलि द्वारा शोक संवेदना प्रकट की गई।

– सुरेश चन्द्र पाटोदी

निराश्रित बालिकाओं को वस्त्र वितरित

रोटी, कपड़ा और मकान यह मनुष्य की भौतिक आवश्यकताएँ हैं। आध्यात्मिक आवश्यकताओं के साथ भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति भी होनी चाहिये। निराश्रित बालक- बालिकाओं में अन्न, वस्त्र, पाठ्य सामग्री आदि की आवश्यकता रहती है। समय- समय पर आर्य समाज इनकी

आवश्यकताओं को समझकर पूरा करने का प्रयास करता रहता है। उक्त विचार आर्य समाज जिला सभा कोटा के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने मधु स्मृति संस्थान में निराश्रित बालिकाओं को सलवार सूट एवं साड़िया भेंट करते हुये व्यक्त किये। कार्यक्रम में ओम प्रकाश तापड़िया प्रधान आर्य समाज तिलक नगर, बनवारी लाल सिंघल प्रधान आर्य समाज रामपुरा, श्रीचन्द गुप्ता कार्यकारी प्रधान आर्य समाज तलवण्डी, क्षेत्रपाल आर्य पुरोहित एवं जे.एस.दुबे ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में मूलचन्द आर्य, श्रीमती कौशल्या तापड़िया, रघुराज सिंह, शिवदयाल गुप्ता, भैरूलाल शर्मा, द्वारका प्रसाद, राजीव आर्य आदि उपस्थित थे।

अरविन्द पाण्डेय, प्रधान, कोटा

स्वामी दयानन्द-दीक्षान्त विदाई की १५० वीं जयन्ती मनायी

स्वामी दयानन्द स्मारक कर्णवास (बुलन्दशहर), जहाँ महर्षि ने अपने जीवन-काल में दस बार रहकर लम्बी साधना-शास्त्रार्थ किए, दिनांक ३०-३१ मई को वार्षिकोत्सव मनाया गया। प्रथम दिवस को स्वामी दयानन्द सरस्वती की मथुरा से दीक्षान्त विदाई की १४० वीं जयन्ती आचार्य पूरणमल पंछी के ब्रह्मत्व तथा रामदीन पुरुषार्थी के यजमानत्व में सम्पन्न यज्ञ से प्रारम्भ हुई। पं रघुवीर शरण आर्य संरक्षक एवं शिवस्वरूप शर्मा के सान्निध्य में ओम प्रकाश शर्मा, प्रधान ने अध्यक्षता की। वेद मनीषा न्यास अलीगढ़ के अध्यक्ष देवनारायण भारद्वाज ने इस ऐतिहासिक घटना का वर्णन किया और बताया मथुरा से आगरा पहुँच कर स्वामी जी ने सन्ध्या की तीस हजार प्रतियाँ छपवाकर वितरित कीं, जिससे जनता सच्चे परमेश्वर की उपासना करे और ढ़ोंग-पाखण्ड एवं अन्धविश्वास से बचे।

–देवनारायण भारद्वाज, अलीगढ़

स्वतंत्रता सैनानी श्रीमान् छोटू सिंह आर्य की पावन स्मृति में अलवर जिले के हैहय क्षत्रिय मेधावी छात्र-छात्राओं को पुरस्कार

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की सैकण्डरी परीक्षा २०११-१२ में ६५ प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र व छात्राएं इस पुरस्कार योजना के पात्र होंगे।

६५ से ७५ प्रतिशत अंक पाने वालों को	११००.०० रु
७६ से ८५ तक अंक वालों को	१५००.०० रु.
८६ प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वालों को	२१००.०० रु.

– शारदा देवी आर्य, अलवर

पूज्य स्वामी तत्वबोध सरस्वती की पुण्य तिथि एवं कै. देवरत्न आर्य की शोकश्रद्धांजलि सभा

दिनांक २३ जुलाई २०१२ को न्यास स्थित 'सत्यनारायण गुलाबी देवी लाहोटी यज्ञशाला' में यज्ञ सम्पन्न करने के पश्चात् न्यास के संस्थापक अध्यक्ष पूज्य स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती की पुण्य तिथि के अवसर पर उनको स्मृत किया गया साथ ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय कै. देवरत्न आर्य के दुःखद निधन के फलस्वरूप श्रद्धांजलि सभा आयोजित कर आर्यजनों ने उनके बताऐ हुए रास्ते पर चलने का भाव प्रकट किया।

एक और वज्रपात

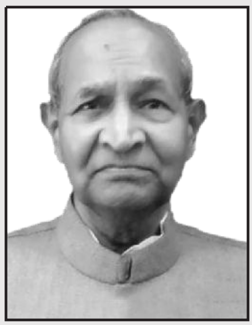

स्व. श्री चन्दूलाल अग्रवाल

यह वर्ष दुखान्तिकाओं का वर्ष साबित हो रहा है। अभी श्री लालचन्द जी मित्तल, स्वामी वैदिकानन्द सरस्वती एवं पाल साहब के निधन के शोक से उभरे नहीं थे कि एक और वज्रपात हो गया। प्रख्यात् उद्योगपति, आर्य समाज काँकरिया के प्रधान, हमारे न्यास के मान्य न्यासी, समाज सेवी, प्रख्यात् दानी, अनेकानेक आर्य संस्थाओं का पोषण करने वाले माननीय चन्दूलाल जी अग्रवाल का निधन १२-७-१२ को हो गया। यह क्षति हमारे निकट अपूरणीय ही रहेगी। न्यास व सत्यार्थ-सौरभ परिवार परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें तथा शोक सन्तप्त परिवार को इस असीम वेदना को सहन करने की क्षमता प्रदान करें। मान्य चन्दूलाल जी के परिवारीजन भी वैदिक संस्कृति की रसधारा को निरन्तर प्रवाहित करने में निज योगदान प्रदान करते रहेंगे, हमें पूर्ण विश्वास है।

– अशोक आर्य

हलचल

शनिवार की रात पहले की रातों से एक सेकेंड लंबी बीती।
दरअसल शनिवार को दुनिया भर की इलेक्ट्रानिक घड़ियों में एक सेकेंड बढ़ा दिया गया ताकि वो धरती की परिक्रमा से तालमेल बनाकर रख सकें। घड़ियों के अविष्कार से पहले लोग वक्त का अंदाजा आकाश में सूर्य के स्थान से लगाते थे। लेकिन जैसे जैसे विज्ञान का विकास हुआ, ये पता लगा कि सूर्य को एक बार परिक्रमा करने में ठीक २४ घंटे नहीं लगते हैं। इसका कारण मौसम में बदलाव और भूगर्भीय सक्रियता हैं। इसका मतलब ये है कि एक निश्चित वक्त के बाद दुनिया भर की घड़ियों में बदलाव की जरूरत होती है। इस कदम के समर्थकों का कहना है कि अगर इस एक सेकेंड की बढ़ोतरी नहीं होती है तो वक्त नापने वाली हमारी घड़ियों और पृथ्वी की परिक्रमा करने के वक्त के बीच की दूरी बढ़ेगी। और कई दशकों तक अगर सुधार के लिए कोई कदम नहीं उठाया गया, तो दिन में रात का वक्त दिखेगा और रात का दिन में।

बिगबेन टावर भी झुका
लंदन। इटली में पीसा की मीनार के झुकने से सभी वाकिफ हैं, लेकिन अब लंदन की एक पहचान कहे जाने वाले बिग बेन टावर के भी झुकने की बात सामने आ रही है। बिगबेन टावर को क्लाक टावर के रूप में भी जाना जाता है। इसका निर्माण १८५९ में पूरा हुआ था। हाल ही में 'संडे टेलीग्राफ' द्वारा 'फ्रीडम आफ इंफारमेशन रिक्वेस्ट' के तहत हासिल की गई वर्ष २००९ की एक रिपोर्ट के मुताबिक ३५६ फुट ९६ मीटर ऊँचा टावर उत्तर-पश्चिम दिशा की ओर ०-२६ डिग्री के कोण पर झुक रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि इसे लेकर घबराने की जरूरत नहीं है। इसे पीसा की झुकी हुई मीनार की स्थिति में आने तक हजारों साल लगेंगे।

पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के दक्षिणी भाग में ईशनिंदा के एक अभियुक्त को हजारों लोगों की भीड़ ने एक थाने से जबरन बाहर निकालकर आग लगा दी। पुलिस के अनुसार पंजाब में बहावलपुर के नजदीक स्थित एक गाँव में ये घटना तब घटी जब इस व्यक्ति पर कुरान की एक प्रति को जलाने का आरोप लगाया गया। उस व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया गया था और गाँव के थाने में सलाखों के पीछे रखा गया था। भीड़ सलाखों के पीछे कैद व्यक्ति को घसीटती हुई थाने के बाहर ले आई और उसे उसी जगह पर ले गई जहाँ कथित तौर पर उसने कुरान की प्रति को जलाया था। इसके बाद उस पर पेट्रोल छिड़क कर आग लगा दी गई जिसके बाद उसने दम तोड़ दिया।

यमुनानगर। डॉक्टरी पेशे को भगवान के समान दर्जा दिया गया है। कुछ ऐसे डाक्टर भी हैं जो अपना बिजनेस चलाने के लिए जन्म से पहले ही कन्या को कोख में कत्ल करने के बाद टायलेट में बहा देते हैं। रोंगटे खड़े कर देने वाली यह हकीकत हरियाणा के यमुनानगर की है। यहाँ एक आलीशान कोठी में पिछले कई सालों से यह काला धंधा धड़ल्ले से चल रहा था और इस धंधे को अंजाम दे रही थीं एक बीएमएस डॉक्टर। यहाँ पिछले पाँच सालों से कन्याओं को कोख में मारकर टायलेट में बहा दिया जाता है। जब स्वास्थ्य विभाग व रेड क्रास की टीम ने जगाधरी इलाके की सरस्वती कालोनी की कोठी नंबर ४३ में रेड की तो सच चौंकाने वाला था। अस्पताल में काम करने वाली महिला रजनी की मानें तो महीने में छह-सात केस आ ही जाते हैं और महिला का गर्भपात कराने के बाद भ्रूण को टायलेट में बहा दिया जाता है। वहीं उसने कैमरे से हट कर यह भी बोला कि अनमैरिड लड़कियों का भी गर्भपात करा दिया जाता है। फिलहाल आरोपी महिला डाक्टर को पुलिस ने हिरासत में लेकर कार्रवाई आरंभ कर

प्रतिस्वर

पत्रिका सत्यार्थ-सौरभ के तीन अंक मिले हैं। आपके हाथों में उसकी श्रेष्ठता तथा साहित्यक गुणवत्ता पर शंका तो हो ही नहीं सकती परन्तु एक-दो बात निवेदन करने की अनुमति चाहता हूँ-
१. तीनों पत्रिकाओं में यह पता नहीं पड़ता कि कौन-सी किस माह की व किस सन् की है। माह में एक अंक है या दो। यदि दो तो मई प्रथम, मई द्वितीय होना चाहिये। जैसा संघ की पत्रिका "पाथेय-कण" में होता है।
२. सत्यार्थ-सौरभ, परोपकारी, वैदिक पथ, इतने ऊँचे स्तर के हैं कि सामान्य व्यक्ति की समझ से ऊपर हैं। हाँ ५०-६० वर्ष से ऊपर के आर्य साहित्य से जुड़े लोग ही इन्हें अच्छा समझ सकते हैं और इस आयु के लोगों की दृष्टि कमजोर हो जाती है। ऐसे में आपने अपनी पत्रिका को इतने छोटे अक्षरों में छापा है कि मेरे लिए (आयु ९०) में पढ़ना अत्यंत कष्टदायक होता है।

– अम्बा प्रसाद शर्मा, भीलवाड़ा

मेरे विचार में एक ख्वाब था कि एक पेपर ऐसा निकले जो भारत वर्ष के हर घर पहुँचे जिसमें समाचार के साथ-साथ वेद की बातें, सत्यार्थ प्रकाश, महर्षि दयानन्द के दिखाए मार्ग सभी जगह पहुँचे। सत्यार्थ-सौरभ पढ़कर, कागज छपाई इसमें सत्यार्थ प्रकाश का सन्देश और सामग्री पढ़कर काफी खुश हुआ। अशोक जी द्वारा यह अच्छी तरह और भी निखरेगा, ऐसी उम्मीद है। यह अभी शुरूआत है। आर्य जगत् में लगभग १५-२० पत्रिकाएँ निकल रही हैं। लेकिन सत्यार्थ-सौरभ काफी अच्छा लगा। पत्रिकाओं में आपस के झगड़े विद्वानों का आपस का अहम् झंझट पढ़कर बहुत ही दुःख होता है। इसलिए किसी आर्य पत्रिका का सदस्य गैर आर्यों को बनाऊँ, हिम्मत नहीं हुई। सत्यार्थ-सौरभ पढ़कर हमारी कोशिश रहेगी कि सैकड़ों १००-१०० लोगों को सदस्य बनाऊँ। मैं चाहता हूँ कि सत्यार्थ-सौरभ में कभी भी आपस की कटुता का सन्देश न जाकर सिर्फ अच्छी बातें, वेद और सत्यार्थ-प्रकाश की ही बातें हो जिससे आर्य जगत् की प्रथम पत्रिका साबित हो। साथ जिनके हाथ में जाय पत्रिका की वाहवाही हो और जो भी पढ़े, ज्यादा से ज्यादा सदस्य बनाकर घर-घर पहुँचाने की कोशिश आर्य जगत् के लोग करें।

– आर्य राजकिशोर मोदी (भीलवाड़ा)

बहुत वर्षों से आर्य समाज के क्षेत्र में ऐसी पत्रिका की कमी बड़ी खलती थी जिसे आर्य समाज के इतर लोगों को पढ़ने के लिए दे सकें तथा वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार अन्य मतावलम्बियों में भी हो सके। सत्यार्थ-सौरभ ने इस कमी को पूरा कर दिया है। पुनः बहुत-बहुत बधाई

– राजेन्द्र कुमार आर्य, कोटा

साभार, सहर्ष, हमें अत्यन्त खुशी होती है कि आपकी मासिक पत्रिका का प्रथम अंक, जून-२०१२ वर्ष-एक प्राप्त हुआ। वैदिक धर्म की मान्यताओं का प्रचार-प्रसार बढ़ता रहे। अंधश्रद्धा, अंधविश्वास का विध्वंस हो, सच्चे राष्ट्र-प्रेमी-सेवक तैयार हों। ऐसी ईश्वर-प्रार्थना, हम आपके जैसे कार्य में जुटे हुए सच्चे ऋषि भक्त के लिए करते हैं।

– श्री मेजर कन्हैयालाल, गुजरात

आपको एवं सम्पादक मंडल व ट्रस्टियों को धन्यवाद जिन्होंने भारी मेहनत करके महर्षि के सपनों को साकार करने की कोशिश की है उनको प्रणाम। मेरा सहयोग आपके साथ है। पत्रिका मिल गयी है। सहयोग बनाये रखें।

कभी-कभी तुक्के भी तीर बन जाते हैं

बहुत दिनों पहले की बात है। एक गाँव में एक पंडित जी रहते थे। अध्ययन करने का मौका कम ही निकाल पाते थे तो उन्होंने कुछ 'जुगाड़' बनाए। उस समय लोग अपनी छोटी-छोटी समस्याएँ 'पंडीजी' लोगों से ही हल करवाते थे। अधिकतम लोगों को 'आज तिथि कौन सी है ?' जैसी चीजों को जानने की फिक्र रहती थी क्योंकि वे विद्यारंभ से लेकर खेत की बुवाई और कन्या के लिए वर देखने से लेकर शव का अंतिम संस्कार करने तक का काम तिथि के अनुसार करते थे। हमारे पंडीजी ने तिथि देखने का एक प्रेक्टिकल तरीका निकाला। उन्होंने अपने घर में कोनों पर गिनकर तिथियों के हिसाब से लाठियाँ रख दीं। जब भी कोई तिथि पूछने आता पंडीजी अंदर जाते लाठी देखते और लौट कर तिथि बता देते। कभी गलती नहीं होती थी। इसी प्रकार दिन सुख से गुजर रहे थे।

एक दिन सुबह पंडीजी बड़े तडके (सुबह) उठ कर मैदान (शौच) गए तो उन्होंने देखा कि धोबी का गधा उनके खेत में चर रहा था। गधा हाँककर उन्होंने बुद्धू के खेतों में कर दिया और फारिग होके घर लौट आए। थोड़ी देर बाद ही धोबी आ पहुँचा। बेचारा परेशान था उसने कहा- 'पंडीजी मेरा गधा तीन दिन से लापता है। मैं तो खोज के थक गया अब आप ही कोई उपाय करिये।' पंडीजी के दिमाग में कीड़ा कुलबुलाया। थोड़ी देर चुपचाप बैठे रहे, घर के अंदर गए और लौट के बोले 'मेरी गणना के हिसाब से तुम्हारा गधा इस समय बुद्धू के खेत में होना चाहिए'। धोबी भाग के बुद्धू के खेत पर पहुँचा तो देखा गधा कान हिला-हिला के मस्त चर रहा है'। धोबी खुश-खुश गधा लेके घर आया और पंडीजी की बड़ी जयजयकार की।

एक दिन पंडीजी ओसारे में बैठे रस्सी बट रहे थे, अंदर पंडिताइन और पड़ोसन कुछ बात कर रही थीं। पड़ोसन ने कहा 'पंडिताइन, ई भिखुआ के मेहरारू बड़ी ठसक वाली है। सबेरे से दस तोला गहना लाद के दाल दर रही है। हमका तो देखि के हँसी आय गई।'

दूसरे दिन परेशान सा भीखू पंडीजी के पास आ के रोने लगा- 'पंडीजी, गजब होई गया ! मेहरिया के सोने की टिकुली गुम हो गई। घर में कारन मचा रखा है। आप तो ज्ञानी हो कुछ मदद करो। पंडीजी फिर थोड़ी देर विचार किये, घर के अंदर गए और बाहर आ के बोले- 'जा भिखुआ, दाल वाली देग उलट दे उसी में मिल जायेगी'। पंडीजी की सहज बुद्धि काम

कर गई। टिकुली मिल गई। भीखू और उसकी पत्नी ने तो पंडीजी के गुन पूरे गाँव में गाने शुरू कर दिए। हो गए हमारे पंडीजी मशहूर। प्रसिद्धि नगर तक फैलने लगी।

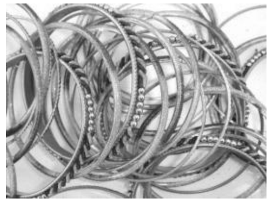

एक दिन राजा अपनी आरामगाह में बैठे थे। पता नहीं कहाँ से एक भुनगा उड़ता चला आया। राजा ने झपट के उसे मुट्ठी में कैद कर लिया। तभी उनके दिमाग में भी कीड़ा कुलबुलाया 'क्यों ना इससे अपने ज्ञानियों की परीक्षा ले ली जाय'। भुनगा मुट्ठी में दबाय पहुँचे दरबार में और सभा में कहा - 'जो बताये कि मेरी मुट्ठी में क्या है उसे ज्ञानी मानूं'। सभी ने दिमाग लगाना शुरू किया कि राजा के हाथ में क्या हो सकता है ? किसी ने हीरा बताया, किसी ने मोती, किसी ने पन्ना बताया तो किसी ने पुखराज। सबकी बात गलत। राजा ने कहा 'जो कोई भी बताए उसे तमाम इनामो-इकराम नवाजा जायेगा। बहुतेरे आये और मुँह की खाई। अब तो दिल्लगी गुस्से में बदल गई। राजा के क्रोध से बचने के लिए वहाँ किसी ने कहा- 'महाराज पास के गाँव में एक पंडित जी हैं, बड़े ज्ञानी हैं, सुना है गुमशुदा चीजों को चुटकी में बता देते हैं। उनके पास जवाब जरूर होगा ' राजा ने कहा 'बुलाओ पंडित को और ना बता पाया तो सौ कोड़े लगवाये जायेंगे।'

सिपाही राजा का परवाना लेके पंडीजी के घर पहुँच गए। पंडीजी दरबार आये और मसला पता चला तो उनके तो काटो तो खून नहीं 'हाय! विधिना अब कोड़े भी खाने पड़ेंगे। बेइज्जती होगी सो अलग।' काफी देर सिर खुजाते रहे कुछ नहीं सूझा तो सोचा सच्चाई बयाँ कर दें, शायद राजा कोड़े ना लगवाए। अब उन्होंने कहा राजन ध्यान से सुनियेगा गूढ़ बात बताए देता हूँ-

'लाठी देखा कोन-कोनैय्या, गदहा देखा खेत चरईया,
आई पड़ोसन कह गई बात, भुनगा फँसि गए राजा के हाथ'

राजा ने फौरन मुट्ठी खोल दी। भुनगा उड़ निकला। राजा ने तमाम इनाम-इकराम पंडीजी को दे कर विदा किया। पंडीजी भी जान बची तो लाखों पाए। खुशी-खुशी घर पहुँच पंडिताइन को माल असबाब थमाया। और गिर गए माँ के पैरों में 'माँ आज मैं जान गया कि माँ-बाप के मुँह से ब्रह्म-वचन निकलता है। मुझे अक्सर खीज होती थी कि मेरा नाम भुनगा क्यों रखा? कुछ अच्छा भी तो रख सकते थे। आज तुम्हारे दिए इस नाम ने दौलत भी दी और इज्जत भी।' माँ ने भुनगा को उठा के गले लगा लिया। ❑❑❑

- चातक

भारतीय भाषाओं में सत्यार्थ प्रकाश के अनुवाद और अनुवादक

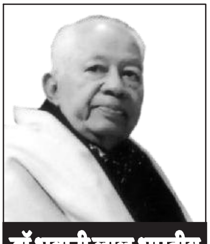

डॉ.भवानी लाल भारतीय

सत्यार्थ प्रकाश का लेखन भारत की प्रधान लोकभाषा हिन्दी में हुआ था। तत्पश्चात् यहाँ की प्रान्तीय भाषाओं में इसके अनुवाद हुए। इनका विवरण इस प्रकार है–

उर्दू अनुवाद– पंजाब की प्रधान भाषा उर्दू थी। आर्य समाज के प्रारम्भिक काल में पंजाब के आर्य समाज तथा यहाँ की आर्य संस्थाएँ अपने कार्य विवरण उर्दू में लिखती थीं तथा उनका पत्र व्यवहार भी प्रायः उर्दू में ही होता था। पठन-पाठन में उर्दू को प्रधानता मिली हुई थी। यही कारण था,सत्यार्थ प्रकाश के उर्दू अनुवाद को उन्नीसवीं शताब्दी के समाप्त होते होते १८९९ में प्रकाशित करा दिया गया। 'मुस्तनिद सत्यार्थ प्रकाश' शीर्षक से इस अनुवाद को तैयार किया था पंडित आत्माराम अमृतसरी तथा भक्त रैमल ने।

आत्माराम अमृतसरी (१८६७–१९३८) पंजाब की प्रारम्भिक आर्य सामाजिक गतिविधियों के प्रमुख सूत्रधार थे। कालान्तर में वे बड़ौदा के महाराज सर सयाजीराव गायकवाड़ के अनुरोध पर इस राज्य की शिक्षा सेवा में आये और हरिजन वर्ग को शिक्षित करने का कार्य किया। उन्होंने भक्त रैमल के सहयोग से सत्यार्थ प्रकाश का उर्दू अनुवाद किया जो आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से १८९९ में छपा। इस ग्रन्थ का एक अन्य अनुवाद पंडित चमूपति ने 'अनवार हकीकत' नाम से किया। मूलतः बहावलपुर के निवासी पंडित चमूपति (१८९३–१९३७) का लेखन हिन्दी,उर्दू तथा अंग्रेजी में समान रूप से हुआ था। उनके इस उर्दू अनुवाद को राजपाल एंड संस लाहौर ने १९०८ से १९३० तक दस बार प्रकाशित किया।

इसी अनुवाद को आर्य प्रतिनिधि सभा ने १९३९ में प्रकाशित किया तथा मास्टर लक्ष्मण रामनगरी ने भी प्रकाशित किया। सत्यार्थ प्रकाश का एक अन्य अनुवाद मेहता राधाकृष्ण ने भी किया। यह अनुवाद प्रथम बार १८९७ में तैयार किया गया परन्तु इसका प्रकाशन १९०५ में लाहौर के सर्वहितकारी प्रेस से हुआ। इसके अन्य संस्करण आर्य पुस्तकालय लाहौर(१९३०) आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा लाहौर(१९४३) तथा लाजपतराय एंड संस लाहौर से छपे।

भाई निहालसिंह (जन्मना सिख) ने उर्दू अनुवाद कार्य में पंडित आत्माराम अमृतसरी का सहयोग किया था। उनका किया नवें समुल्लास का उर्दू अनुवाद विद्याधर प्रेस मेरठ से १८९७ में पृथक् छप गया था। आर्य समाज लाहौर के मंत्री पद पर रहे लाला जीवनदास ने ग्यारह समुल्लास पर्यन्त ग्रन्थ का उर्दू अनुवाद किया था। यह भी ज्ञातव्य है कि मास्टर अब्दुल गफूर (हिन्दू धर्म में प्रविष्ट होकर पंडित धर्मपाल) ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण १८७५ का उर्दू अनुवाद किया ।

पंजाबी अनुवाद– गुरमुखी लिपि में सत्यार्थ प्रकाश का पंजाबी अनुवाद पंडित आत्माराम अमृसरी ने किया था जो १९१२ में आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब से छपा। इसके वजीर सिंह प्रेस लाहौर से छपने का भी उल्लेख मिलता है। अधिकांश आर्य समाजी पाठकों के द्वारा हिन्दी में सत्यार्थ प्रकाश का पठन पाठन होने के कारण पंजाबी सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के अधिक अवसर नहीं आये। इसकी एक दुर्लभ प्रति मुझे पंडित सुखदेवराज शास्त्री(मुख्याधिष्ठाता विरजानन्द संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर पंजाब) ने भेंट की थी।

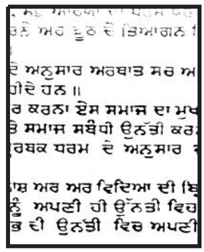

सिन्धी अनुवादः– सिंध में आर्य समाज का प्रभावशाली प्रचार देश विभाजन के समय तक रहा था। कराची, हैदराबाद, सक्खर, मीरपुर आदि में आर्य समाज शक्तिशाली था। सिन्धी भाषा में सत्यार्थ प्रकाश के अनुवादक पंडित जीवनलाल आर्य मूलतः एक मठ के महन्त थे जो कालान्तर में आर्य समाजी बन गए। इनका किया सत्यार्थ प्रकाश का सिन्धी अनुवाद का

प्रकाशन प्रथम बार १९३७ में सिन्ध की आर्य प्रतिनिधि सभा ने किया। तत्पश्चात् इसे गोविन्दराम हासानन्द ने १९४२ में छपाया। आर्य प्रकाशक म. गोविन्दराम मूलतः सिंध के शिकारपुर के निवासी थे। जब मुस्लिम लीग ने १९४६ में सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें समुल्लास की जब्ती का आन्दोलन चलाया तो सार्वदेशिक सभा ने १९४६ में इस अनुवाद को प्रकाशित कराया। अजमेर के प्रसिद्ध हकीम वीरूमल आर्य प्रेमी ने भी सिन्धी अनुवाद प्रकाशित किया था।

गुजराती अनुवाद- ऋषि दयानन्द की मातृभाषा गुजराती में सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम अनुवाद करने का श्रेय पंडित मंछाशंकर जयशंकर द्विवेदी को है। ये महानुभाव आर्य समाज की स्थापना काल से ही आर्य समाज बम्बई के सभासद थे। आर्य समाज बम्बई की प्रारम्भिक सदस्य सूची में इनका नाम संख्या ५७ पर लिखा है। पेशे से ये अध्यापक थे। यह गुर्जर अनुवाद १९०५ में जगदीश्वर प्रेस बम्बई से छपा था। अनुवादक को यह कार्य करने की प्रेरणा वैदिक यंत्रालय अजमेर ने दी थी। मुद्रण व्यय जेठाभाई प्रेम जी ट्रस्ट ने वहन किया था। द्विवेदी जी स्वामी दयानन्द साहित्य के समकालीन थे और उन्होंने महाराज के दर्शन भी किए थे। पंडित मयाशंकर शर्मा गुजराती में सत्यार्थ प्रकाश के एक अन्य अनुवादक थे। इनका जन्म १८८७ तथा निधन १९६८ में हुआ। इनका किया गुर्जर अनुवाद प्रथम बार आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई द्वारा १९२६ में दूसरी बार सेठ शूरजी वल्लभदास कच्छ कैसल बम्बई द्वारा १९२८ में तथा गुरुकुल सूपा (जिला नवासरी) द्वारा १९५२ में छपा। डॉ.दिलीप वेदालंकार ने प्रचलित गुजराती अनुवाद का संशोधित संस्करण तैयार किया जो चरोतर प्रदेश आर्य समाज आनन्द (गुजरात) ने १९७५ में प्रकाशित किया।

ભૂમિકા

મેં આ સત્યાર્થ-પ્રકાશ ગ્રંથ બનાવ્યો
પૂર્વે સંસ્કૃતમાં ભાષણ કરવાના, પઠન
ાના અને જન્મભૂમિની ભાષા ગુજરાત
ભાષાનું વિશેષ પરિજ્ઞાન ન હતું, એ
ાઈ હતી. હવે ભાષા બોલવા અને
ાયો છે, એટલા માટે આ ગ્રંથને વ્યાકરણ
વાર છપાવ્યો છે. કોઈ-કોઈ સ્થળે શ
ર કર્યો છે, તે કરવો ઉચિત હતો, કાર
ેના ભાષાની પરિપાટી સુધરવી મુશ્
કરવામાં આવ્યો નથી. પરંતુ વિશેષ

मराठी अनुवाद- वेदों के विश्रुत विद्वान् पंडित श्रीपाद दामोदर सातवलेकर (१८६७-१९६८) ने सत्यार्थ प्रकाश का मराठी भाषा में अनुवाद किया। इसे आर्य समाज कोल्हापुर ने १९०४ में प्रकाशित किया। एक अन्य अनुवाद पंडित लक्ष्मणराव ओघले शास्त्री (१८९८-१९७४) ने किया जो १९५६ में प्रकाशित हुआ। पंडित ओघले का विस्तृत परिचय मैंने आर्य लेखक कोश पृ. २४८ में दिया है।

प्रकाशकीय

्या सर्वांगीण विकासाची दृष्टी देणाऱ्या 'सत्यार्थप्र
ांच्या सेवेत सादर करीत असताना आम्हास अ
ा मराठी भाषेत प्रथम अनुवाद करण्यात आला
र्पक वाटत नाही. भाषेच्या जीवंतपणासाठी
ावश्यक असल्यामुळे आम्हास नव्याने भाषांतर
ण्यात आला आहे.
सत्यार्थप्रकाशचे प्रकाशन महर्षी दयानंदांच्या ह
ात महर्षींनीच कांही संशोधन केले व दुसरी आ
आवृत्ती आज सर्वत्र वापरली जात आहे. स
४ नंतरच होवू शकले. स्व. श्री सातवळेकरांनी
जनतेपर्यंत पोहचवण्याचे महान् कार्य पार पाडले
ात झाल्या आहेत. ऐतिहासिक दृष्टिकोणातून

दाक्षिणात्य भाषाओं में अनुवाद

यद्यपि केरल तथा तमिलनाडु में आर्य समाज का प्रचार नगण्य सा है। किन्तु आन्ध्रप्रदेश तथा कर्नाटक में इसका पर्याप्त प्रचार प्रसार है। वर्तमान आन्ध्र प्रदेश का वह प्रान्त जो मराठवाड़ा कहलाता है,विगत में निजाम हैदराबाद के शासन के अन्तर्गत था। यही कारण है कि इस क्षेत्र में ऋषि दयानन्द की शिक्षाओं का पर्याप्त प्रचार रहा। दक्षिण की भाषाएँ संस्कृत बहुल हैं। तमिल,तेलुगु,मलयालम तथा कन्नड में सत्यार्थ प्रकाश के अनुवाद हुए हैं। इनका विवरण इस प्रकार है-

तमिल- एम.आर.जम्बुनाथन (१८९६-१९७४) ने तमिल में सत्यार्थ प्रकाश का जो अनुवाद किया उसे आर्य समाज मद्रास ने १९२६ में प्रकाशित किया। श्री जम्बुनाथन (पूरा नाम मनववल रामस्वामी जम्बुनाथन था।) इन्होनें अपनी मातृभाषा तमिल में चारों वेदों तथा उपनिषदों का भी अनुवाद किया था। वे तिरुचिरापल्ली जिले के निवासी थे।

பதிப்புரை

ந்தாின் சத்தியார்த்தப்
ம் உலகப் பொது நா
ால். இந்நூலே பாரத
போன்றது. இந்நூ
ம் பாிதி போன்றது.
வர் ஆவார். நமது பா
வேதக் கலையாக உரு
த்திரம வேறில்லை "நா
பழமொழி. இன்று புரா
அதன் அனுஷ்டானப் ப
பெருமை மகாிஷி தயா
மலர்ச்சியின் தந்தை.

तेलुगु- आदि पूड़ि सोमनाथ राव आर्य प्रतिनिधि सभा निजाम स्टेट के उपदेशक थे। १९०६ में इन्होंने १० समुल्लासों का अनुवाद किया। इनके भाई गोपाल राव ने ११ वें का अनुवाद किया। अवशिष्ट तीन समुल्लासों का अनुवाद पंडित रामरत्नाचार्य ने किया। इस प्रकार तीन विद्वानों का किया यह तेलुगु अनुवाद सर्वप्रथम १९२३ में छपा। आर्य समाज बेंगलोर ने इसे १९३३ में पुनः प्रकाशित किया।

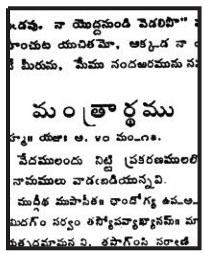
మంత్రార్థము

వేదములందు నిట్టి ప్రకరణములలో
నామములు వాడఁబడియున్నవి.

कन्नड़ अनुवाद- सत्यार्थ प्रकाश के कन्नड़ अनुवादक भास्कर पन्त थे। यह अनुवाद आर्य समाज बेंगलोर

(ಉತ್ತರಾರ್ಧ)

ಪರಮಹಂಸ ಪರಿವ್ರಾಜಕಾ
ದಯಾನಂದ ಸರ
ಅವರಿಂದ ವಿರಚಿತವಾಗಿದೆ

ಪ್ರಕಾಶಕರು :
ಶ್ರದ್ಧಾನಂದ ಭವನ,
-560 004 (ದೂರವಾಣಿ :

ने १९३२ में छपाया। पन्त जी का विस्तृत परिचय नहीं मिलता।

ആമുഖം

मलयालम अनुवाद- आर्य समाज मिशन कालीकट ने तैयार करवाया। केरल में हुए मोपला विद्रोह के कारण दुर्दशाग्रस्त हिन्दुओं की सहायता के लिए आर्य प्रादेशिक सभा ने अपना सहायता दल वहाँ भेजा था। इस अवसर पर प्रादेशिक सभा ने सत्यार्थ प्रकाश के उक्त अनुवाद को १९३३ में छपाया।

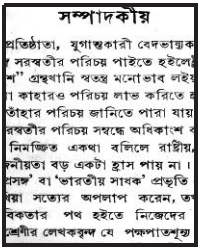
সম্পাদকীয়

बंगला अनुवाद- सत्यार्थ प्रकाश का एक बंगला अनुवाद वैदिक यंत्रालय,अजमेर से प्रकाशित हुआ था, इसका उल्लेख मिलता है। मूलतः कश्मीरी किन्तु बंगाल में जा बसे शंकरनाथ पंडित ने अंग्रेजी तथा बंगला में प्रचुर मात्रा में आर्य साहित्य का प्रणयन किया था। उन्होंने बंगला में जो अनुवाद किया वह १९०३ (बंगाल १९०१) में बाद में १९११ तथा १९२६ में छपा। आर्य प्रतिनिधि सभा बंग आसाम ने इसे १९४७ में पुनः छपवाया। पंडित दीनबन्धु वेदशास्त्री (१९०१-१९७६) ने भी सत्यार्थ प्रकाश का अनुवाद किया। इसे गोविन्दराम हासानन्द कलकत्ता ने १९३४ में प्रकाशित किया।

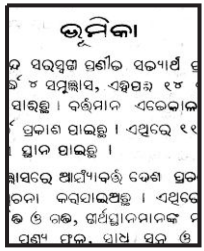
ଭୂମିକା

उड़िया- ओडिशा प्रान्त में आर्य समाज का पर्याप्त प्रचार है। ओडिया अनुवादक श्रीवत्स पण्डा(१८६०-१९४३) का जन्म ओडिशा के गंजाम जिले के एक गाँव में हुआ था। (परिचय- आर्य लेखक कोश पृ. ३०५) इनका किया अनुवाद गोरक्षाश्रम तनरड़ा(गंजाम) से १९१७ में छपा। एक अन्य अनुवाद उत्कल साहित्य संस्थान गुरुकुल आमसेना नवापारा ने पंडित लक्ष्मीनारायण शास्त्री से करवाया जो स्वामी धर्मानन्द जी ने प्रकाशित किया।

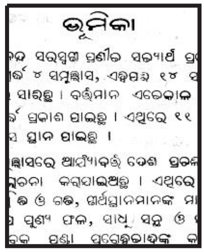
ଭୂମିକା

असमिया- में सत्यार्थ प्रकाश का अनुवाद आर्य समाज गुवाहाटी ने प्रकाशित किया है। स्वामी शुद्धानन्द भारती ने तमिल में एक अन्य अनुवाद किया। इसे आर्य समाज मद्रास ने १९७४ में प्रकाशित किया। ये प्रसिद्ध सन्त तथा योगी थे।

सत्यार्थ प्रकाश के संस्कृत अनुवाद (पंडित शंकर नाथ पाठक कृत) तथा नेपाली अनुवाद (दिलुसिंग राई) का परिचय पृथक् दिया जायेगा।

❑❑❑

महर्षि दयानन्द का ओषधि-पत्र

स्वास्थ्य

महर्षि दयानंद गृह-त्याग के पश्चात् १९६० में मथुरा आने से पूर्व हिमालय की उपत्यकाओं, पर्वतीय क्षेत्रों, गंगा-तटीय प्रदेशों तथा नर्मदा आदि नदियों के किनारे विचरते रहे। इस मध्य में वे सदैव गुणी लोगों की खोज में रहते थ। इसी समय तथा आयुर्वेद के अध्ययन में,अनेक ओषधि उन्हें ज्ञात हुई होंगी। जिनमें से अनेक उनकी स्वानुभूत भी हैं। रावराजा तेजसिंह जी को लिखे पत्र दिनांक १६ सितम्बर १८८३ में इनका विवरण प्राप्त है, पाठकों के लाभार्थ नीचे उद्धृत हैं:-

१-सर्पोषधि- जमाल घोटे की गिरी को नीबूं के रस में एक दिन व रात भिगोय, पुनः एक दिन-रात सुखावे। इस रीति इक्कीस पुट अर्थात् बयालीस दिन रात में करके रख लें। जब किसी को साँप काटे तब पत्थर पर घिस के जिस जगह काटा हो लगादे। यदि मूर्छित हो गया हो तो सलाई से थोडा सा आँख के ऊपर लगा दे और त्रिफला के जल को उपस्थित रखे। मूर्छा उतर जाने पर त्रिफला के जल से आँखें धोवे। वैसे कई दिन तक धोवे। त्रिफला को रात्री के समय मट्टी के पात्र में भिगोवे और कंठ तक ठंडा जल पिलाके दो चार बार कय करावे, तो सर्प के विष से बच जाय।

द्वितीय ओषधि-जिस किसी को साँप काटे, उसको तुरंत ही एक रीठा कुछ पानी में घिसकर पिलाना चाहिए। तुरंत ही विष जाता रहेगा।

तृतीय ओषधि- नींव गिलोय को पानी में वांट के पीवे। यदि मूर्छा आ गई हो तो जहाँ तक हो सके वहाँ तक पिचकारी से नींव गिलोय को पेट में पहुचावें, तो वह बच जाय।

२- ओषध गोहरे के विष की- दोनामरावा पैसे भर, पानी में पीस कर मिला पिला, देवे। यदि मूर्छित हो गया हो तो पिचकारी से पेट में पहुँचावे, तो अच्छा हो जाय।

३- बाला की ओषधि- छः मासे आक का दूध और बारह मासे गुड, दोनों को मिलाकर टिकड़ी करके एक, दो अथवा तीन बार बाले पर लगावे तो बाला जाय।

४- हड़के कुत्ते की ओषधि- सफेद तिल का तेल और आकरा दूध बराबर मिलाके कुत्ता के काटे हुए घाव में लगादे, इससे अच्छा हो जायगा।

द्वितीय ओषधि - पुराना घृत, धतूरे के बीज और आक का दूध अथवा घृत आक का दूध और गुड इनको जल में पीसकर घाव में लगा देने से अच्छा हो जाता है।

५- वीर्य पुष्ट होने का साधन - सूखे आंवलों को कूट-छान उसके बराबर मिश्री मिलाकर गौ के दूध के साथ प्रातःसायं एक तोले भर की फंकी लेवे तो प्रमेह आदि के रोग जायँ।

६- पेट पीड़ा की ओषधि- सोंठ, सुहागा, हींग इनको बराबर लेकर सहजने की छाल अर्क में घोट कर गोली बाँध लेवे। एक गोली गर्म जल के साथ खिला

सार्वदेशिक आर्य प्रति. सभा के प्रधान–कै. देवरत्न आर्य तुमको न भूल पाऐंगे

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोपराणि
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही

◆◆◆◆◆◆

जीवन में एक सितारा था
माना वह बेहद प्यारा था
यह डूब गया तो डूब गया
अम्बर के आनन को देखो
कितने इसके तारे टूटे
कितने इसके प्यारे छूटे
जो छूट गए फिर कहाँ मिले
पर बोलो टूटे तारों पर
कब अम्बर शोर मचाता है ?
जीवन में वह था एक कुसुम
थे उस पर नित्य निछावर तुम
वह सूख गया तो सूख गया
मधुबन की छाती को देखो
सूखी कितनी इसकी कलियाँ
मुरझायीं कितनी वल्लरियाँ
जो मुरझायीं फिर कहाँ खिलीं
पर बोलो सूखे फूलों पर
कब मधुबन शोर मचाता है ?

–हरिवंश राय बच्चन

जितने प्यारे हो तुम हमको, ईश्वर को उससे ज्यादा
याद रहेगी दिल में हरदम, करते हैं हम अलविदा

अलविदा ऐ 'आर्य रत्न'

जहाँ गुरु का अन्त्येष्टि संस्कार हुआ वहीं शिष्य का पार्थिव शरीर पंचतत्वों में विलीन होते हुये

कफ़न जब बढ़ा तो
नज़र क्यूँ डबडबा गई
श्रृंगार क्यूँ सहम गया
बहार क्यों लजा गई
न जीवन कुछ है न मृत्यु कुछ है,
बस इतनी सी बात है
किसी की आँख खुल गई
किसी को नींद आ गई

\- नीरज

◆◆◆◆◆◆

हो चुका खेल
थक गए पाँव
अब सोने दो
जो बन पाया सो रखा है
जो जुट पाया सो रखा है
जब जी चाहे तब ले जाना
कुछ चित्र बनाए थे मैंने
वे सभी सिरहाने रखे हैं
मैं सो जाऊं तो ले जाना
पतझड के सूखे पत्ते
मुझसे कुछ कहते दिखते
ये बडे पुराने दिखते
बदलो इनको
कोई नूतन भेस बनाओ
मैं फिर आऊंगा
घबराना मत
आगे से हट जाओ

\-राज कुमार

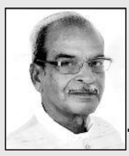

कै. देवरत्न जी का निधन आर्यजगत् की अपूरणीय क्षति है।

\-आनन्द आर्य, कार्यकारी प्रधान
सार्व. आर्य प्रति. सभा
(अजमेर में दिनांक २२ जुलाई २०१२)

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास के संरक्षक-कै. देवरत्न आर्य सदैव प्रेरणास्रोत रहेंगे

नागरिक अभिनन्दन-उदयपुर
2002

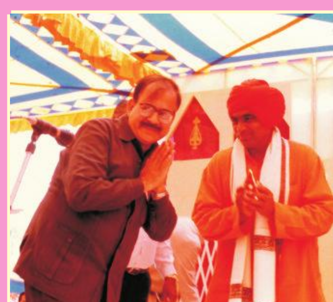

Title Verification - RAJHIN16158/20/1/2012-TC

कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है,
वह सर्वोपरि उत्तम होता है।
अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित,
अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर पिता-माता
के समान कृपा न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य
भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।

सत्यार्थ प्रकाश से

स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर
समस्त देशवासियों को
हार्दिक शुभकामनाएँ

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक आर्य